कार्ल मार्क्स
फ़्रेडरिक एंगेल्स

कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र

साथ में परिशिष्ट

एंगेल्स

कम्युनिज़्म के सिद्धान्त

राहुल फ़ाउण्डेशन
लखनऊ

ISBN 978-93-80303-23-9

मूल्य : रु. 20.00

पहला संस्करण : 1999
दूसरा संशोधित संस्करण : जुलाई, 2007
तीसरा संशोधित संस्करण : जनवरी, 2010

प्रकाशक **: राहुल फ़ाउण्डेशन**
69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज,
लखनऊ–226 006 द्वारा प्रकाशित

आवरण **: रामबाबू**

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस–28, शक्तिनगर, लखनऊ

Communist Party ka Ghoshnapatra
by Karl Marx and Frederick Engels

प्रकाशकीय

कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र वैज्ञानिक कम्युनिज़्म का पहला कार्यक्रम–मूलक दस्तावेज़ है जिसमें मार्क्सवाद के मूल सिद्धान्तों की विवेचना की गयी है। यह महान ऐतिहासिक दस्तावेज़ वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के सिद्धान्त के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स और फ़्रेडरिक एंगेल्स ने तैयार किया था और 1848 के प्रारम्भ में यह प्रकाशित हुआ था। लेनिन के शब्दों में, "यह छोटी–सी पुस्तिका अनेकानेक ग्रन्थों के बराबर है : उसकी आत्मा सभ्य संसार के समस्त संगठित और संघर्षशील सर्वहाराओं को प्रेरणा देती रही है और उनका मार्गदर्शन करती रही है।"

घोषणापत्र की मूल अन्तर्वस्तु और ऐतिहासिक महत्ता की चर्चा करते हुए, अन्यत्र लेनिन ने लिखा है :

"इस कृति में मेधापूर्ण सुस्पष्टता तथा भव्यता के साथ एक नयी विश्वदृष्टि, सुसंगत भौतिकवाद की रूपरेखा खींची गयी है जो अपनी परिधि में सामाजिक जीवन के क्षेत्र, विकास के सबसे व्यापक तथा गहन सिद्धान्त के रूप में द्वन्द्ववाद, वर्ग–संघर्ष और एक नये, कम्युनिस्ट समाज के स्रष्टा, सर्वहारा वर्ग की विश्व–ऐतिहासिक भूमिका का सिद्धान्त भी ले आता है।"

सार्वकालिक महत्त्व की यह रचना जिस हद तक अपने समय में अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन का आधारभूत दस्तावेज़ थी, उतनी ही आज भी है। यह अनुपम कृति इस इतिहाससिद्ध सच्चाई का तर्कसंगत निरूपण करती है कि इतिहास महान व्यक्तियों के कारनामों, ईश्वरीय इच्छा या महज़ इत्तफ़ाक़ों की एक शृंखला का परिणाम नहीं है, बल्कि यह विभिन्न सामाजिक समूहों या वर्गों से बनता और गतिमान होता है तथा इस वर्ग–संघर्ष की जड़ें समाज की आर्थिक बुनियाद में निहित होती हैं। यह कृति बुर्जुआ समाज की गतिकी को तमाम रहस्यावरणों से बाहर लाकर सर्वहारा क्रान्ति द्वारा उसके ध्वंस, समाजवाद के निर्माण और कम्युनिज़्म की ओर संक्रमण की प्रकिया को सर्वप्रथम और संक्षिप्ततम रूप में सूत्रबद्ध करती है। यही वह सारवस्तु है जिसके चलते डेढ़ शताब्दी से भी अधिक समय बाद, इक्कीसवीं शताब्दी की

सर्वहारा क्रान्ति और सर्वहारा क्रान्तिकारियों के लिए भी यह कृति उतनी ही महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक है जितनी कि यह अपने लिखे जाने के समय थी। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि *कम्युनिस्ट घोषणापत्र* ने मानव इतिहास के मार्ग को बदल दिया। शायद यह अबतक लिखा गया सबसे प्रभावशाली दस्तावेज़ है जिसे दुनिया के कोने-कोने में करोड़ों लोग आज भी पढ़ते हैं और आज भी दुनियाभर के साम्राज्यवादी और पूँजीवादी शासक इसे एक भयंकर रूप से विस्फोटक चीज़ मानते हैं।

हम प्रगति प्रकाशन, मास्को से 1986 में प्रकाशित संशोधित संस्करण को पुनर्मुद्रित करते रहे हैं। हालाँकि यह अनुवाद भी सन्तोषजनक नहीं है, पर इस महत्त्वपूर्ण कृति की अनुपलब्धता और भारी माँग को देखते हुए फ़िलहाल हम इसे ही छापकर पाठकों तक पहुँचाते रहे हैं। प्रस्तुत संस्करण उसी संस्करण पर आधारित है लेकिन हमने अंग्रेज़ी अनुवाद के आधार पर इसे यथासम्भव अधिक शुद्ध और बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है।

इधर कपितय प्रकाशक *घोषणापत्र* की मार्क्स-एंगेल्स द्वारा लिखी गयी अलग-अलग संस्करणों की भूमिकाओं को सम्पादित करके छापते रहे हैं तथा एंगेल्स द्वारा तैयार *घोषणापत्र* के प्रारम्भिक प्रारूप 'कम्युनिज़्म के सिद्धान्त' को भी हटा दिया (अब तक ज़्यादातर यह ड्राफ़्ट भी *घोषणापत्र* के साथ ही छपता रहा है)।

हम समझते हैं कि *घोषणापत्र* के अलग-अलग संस्करणों की मार्क्स-एंगेल्स द्वारा लिखित भूमिकाओं का ऐतिहासिक महत्त्व है और एक तरह से वे इस कृति का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। अतः हम उपरोक्त सभी भूमिकाओं और एंगेल्स के उक्त ड्राफ़्ट को अविकल रूप में शामिल करते रहे हैं।

इस बीच हमने डी. रियाज़ानोव की विस्तृत व्याख्याओं-टिप्पणियों सहित *कम्युनिस्ट घोषणापत्र* का हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया है। *कम्युनिस्ट घोषणापत्र* पर अब तक लिखी सर्वाधिक गम्भीर, वैज्ञानिक और सटीक व्याख्याएँ-टिप्पणियाँ डेविड रियाज़ानोव की ही मानी जाती रही हैं।

हमें आशा है कि हमारा यह उद्यम मार्क्सवाद में रुचि रखने वाले पाठकों, क्रान्तिकारी कार्यकर्त्ताओं और सर्वहारा आन्दोलन के लिए उपयोगी होगा।

– *राहुल फ़ाउण्डेशन*

10.1.2010

अनुक्रम


Manifest

der

Kommunistischen Partei.

Veröffentlicht im Februar 1848.

Proletarier aller Länder vereinigt euch.

London.

कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र के पहले संस्करण का आवरण

1872 के जर्मन संस्करण की भूमिका

कम्युनिस्ट लीग[1] मज़दूरों का अन्तरराष्ट्रीय संघ था। उस ज़माने की स्थितियों में यह एक गुप्त संगठन ही हो सकता था। नवम्बर 1847 में लन्दन में सम्पन्न कांग्रेस में लीग ने हम दोनों को यह काम सौंपा था कि हम प्रकाशन के लिए कम्युनिज़्म का विस्तृत सैद्धान्तिक और व्यावहारिक कार्यक्रम तैयार करें। यही निम्नलिखित *घोषणापत्र* के जन्म की कहानी है जिसकी पाण्डुलिपि फ़रवरी क्रान्ति[2] आरम्भ होने से कुछ सप्ताह पहले लन्दन में मुद्रक के पास पहुँच गयी थी। यह रचना मूलतः जर्मन भाषा में प्रकाशित हुई थी और इसी भाषा में इसके बाद के संस्करण जर्मनी, इंग्लैण्ड और संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित हुए थे। इस प्रकार जर्मन भाषा में इसके कम से कम बारह संस्करण प्रकाशित हुए। सन् 1850 में कुमारी हेलेन मैकफ़र्लेन द्वारा किया गया इसका अंग्रेज़ी अनुवाद "रेड रिपब्लिकन"[3] पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। सन् 1871 के दौरान इसके कम से कम तीन भिन्न-भिन्न अनुवाद संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित हुए थे। सन् 1848 के जून विद्रोह[4] के कुछ पहले इसका फ़्रांसीसी अनुवाद पेरिस से निकला था। और हाल ही में न्यूयॉर्क के *ल सोशलिस्ट*[5] (*Le Socialiste*) नामक पत्र में वह फिर प्रकाशित हुआ। एक दूसरा फ़्रांसीसी अनुवाद भी तैयार हो रहा है। मूल जर्मन संस्करण के प्रकाशन के कुछ समय बाद इसका पोलिश अनुवाद भी लन्दन में प्रकाशित हुआ था। इस शताब्दी के साठवें दशक में जेनेवा में एक रूसी अनुवाद प्रकाशित हुआ था।[6] जर्मन में इसके प्रथम संस्करण के थोड़े ही समय बाद डेनिश भाषा में इसका अनुवाद हुआ था।

पिछले पच्चीस वर्षों के दौरान परिस्थितियाँ चाहे जितनी बदल गयी हों तो भी इस दस्तावेज़ में निरूपित आम सिद्धान्त समग्र रूप में आज भी उतने ही सही हैं जितने कि वे पहले थे। तफ़सीलों में एकाध जगह छोटा-मोटा सुधार किया जा सकता है। जैसाकि *घोषणापत्र* में कहा भी जा चुका है कि सिद्धान्तों का क्रियान्वयन, हर जगह और हमेशा विद्यमान ऐतिहासिक

परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। इसीलिए दूसरे अध्याय के अन्त में प्रस्तावित क्रान्तिकारी कार्रवाइयों पर हमने विशेष ज़ोर नहीं दिया है। कई पहलुओं के दृष्टिगत आज यह भाग भिन्न रूप में लिखा जाता। पिछली चौथाई सदी के दौरान विशाल पैमाने के उद्योग में ज़बरदस्त तरक़्क़ी के मद्देनज़र; इसके साथ मज़दूर वर्ग के पार्टी संगठन में वृद्धि के मद्देनज़र; फ़रवरी क्रान्ति के दौरान प्राप्त अनुभव के मद्देनज़र और उससे भी ज़्यादा पेरिस कम्यून[7] के दो माह के अस्तित्व के दौरान, जब पहली बार सर्वहारा राजनीतिक सत्ता पर काबिज़ रहा था, प्राप्त व्यावहारिक अनुभव के मद्देनज़र, इस कार्यक्रम की कुछ तफ़सीलें पुरानी पड़ गयी हैं। कम्यून ने एक बात तो ख़ास तौर से साबित कर दी, वह यह कि 'मज़दूर वर्ग बनी-बनायी राज्य मशीनरी पर क़ब्ज़ा करके ही उसे अपने उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकता।' (*फ़्रांस में गृहयुद्ध;* 'अन्तरराष्ट्रीय मज़दूर संघ की जनरल कौंसिल की चिट्ठी' में इस बात की अधिक विवेचना की गयी है।)*

इसके अलावा, यह स्वतःस्पष्ट है कि इसमें की गयी समाजवादी साहित्य की आलोचना वर्तमान समय में इसलिए भी अपूर्ण है कि इसमें 1847 तक प्रकाशित रचनाओं का ही ज़िक्र है। इसके अलावा विभिन्न विरोधी पार्टियों के साथ कम्युनिस्टों के सम्बन्ध के बारे में जो टिप्पणियाँ की गयी हैं (देखें अध्याय चार), वे यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से अभी भी प्रासंगिक हैं तथापि वे व्यवहार में पुरानी पड़ गयी हैं क्योंकि तब से राजनीतिक परिस्थितियों में समग्र परिवर्तन हो चुका है और इसलिए भी कि जिन पार्टियों का यहाँ ज़िक्र किया गया है उनमें से अधिकांश पार्टियों का, ऐतिहासिक विकास के दौरान, अस्तित्व समाप्त हो गया है।

इस बीच *घोषणापत्र* एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ बन गया है जिसमें परिवर्तन करने का हमें कोई अधिकार नहीं रह गया है। हो सकता है कि बाद में निकलने वाले पुनर्संस्करण में सन् 1847 से वर्तमान तक के बीच की खाई को पाटने के लिए इसमें भूमिका जोड़ना आवश्यक समझा जाये। यह संस्करण तो इतना अप्रत्याशित था कि हमें उस तरह की भूमिका लिखने का समय ही नहीं मिला।

कार्ल मार्क्स फ़्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 24 जून, 1872

* का. मार्क्स, फ़्रे. एंगेल्स, *संकलित रचनाएँ,* तीन खण्डों में, खण्ड 2, भाग 1, हिन्दी संस्करण, प्रगति प्रकाशन, मास्को, 1977, पृष्ठ 285 – *स.*

1882 के रूसी संस्करण की भूमिका

कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र के बाकुनिन द्वारा किये गये अनुवाद का प्रथम रूसी संस्करण सातवें दशक के आरम्भ में[8] *कोलोकोल*[9] के मुद्रण कार्यालय से प्रकाशित हुआ था। उस समय पश्चिम *घोषणापत्र* के रूसी संस्करण में केवल साहित्यिक कौतुक ही देख सकता था। परन्तु अब इस तरह का दृष्टिकोण असम्भव है।

उस समय (दिसम्बर 1847) सर्वहारा आन्दोलन का कितना सीमित दायरा था, उसे *घोषणापत्र* का आख़िरी अध्याय – विभिन्न विरोधी पार्टियों के सम्बन्ध में कम्युनिस्टों की स्थिति – सर्वाधिक स्पष्टता के साथ प्रदर्शित कर देता है। इसमें रूस तथा संयुक्त राज्य अमेरिका ही ग़ायब हैं। यह वह ज़माना था जब रूस सारे यूरोपीय प्रतिक्रियावाद की आख़िरी बड़ी आरक्षित शक्ति था, जब अमेरिका ने आप्रवासन के माध्यम से यूरोप की सारी बेशी सर्वहारा शक्तियों को अपने अन्दर खपा लिया था। दोनों देश यूरोप को कच्चा माल मुहैया कर रहे थे और साथ ही वे उसके औद्योगिक माल की खपत की मण्डियाँ भी थे। उस समय दोनों इस या उस रूप में विद्यमान यूरोपीय व्यवस्था के आधार–स्तम्भ थे।

आज स्थिति कितनी बदल चुकी है! ठीक यही यूरोपीय आप्रवासन अथाह कृषि उत्पादन के लिए उत्तरी अमेरिका के वास्ते उपयुक्त सिद्ध हुआ, जिसके साथ होड़, आज छोटे–बड़े सारे यूरोपीय भूस्वामित्व की नींवों को ही हिला रही है। इसके अलावा उसने अमेरिका को अपने विपुल औद्योगिक संसाधन इतनी स्फूर्ति के साथ तथा इतने बड़े पैमाने पर अपने लाभार्थ उपयोग में लाने में सक्षम बनाया कि उससे पश्चिमी यूरोप और ख़ास तौर पर इंग्लैण्ड की अब तक मौजूद इज़ारेदारी की जल्द ही कमर टूट जायेगी। दोनों परिस्थितियों का स्वयं अमेरिका पर क्रान्तिकारी ढंग से प्रभाव पड़ रहा है। किसानों का लघु तथा मध्यम दर्जे का भूस्वामित्व पूरी राजनीतिक संरचना का

आधार है, वह क़दम–ब–क़दम विराट फ़ार्मों के साथ होड़ में ढहता जा रहा है। इसके साथ ही औद्योगिक क्षेत्रों में पहली बार बहुत बड़ी संख्या वाले सर्वहारा वर्ग का तथा पूँजियों के कल्पनातीत संकेन्द्रण का विकास हो रहा है।

और अब रूस! 1848–1849 की क्रान्ति के दौरान यूरोपीय राजाओं ने ही नहीं, वरन यूरोपीय बुर्जुआ वर्ग ने भी सर्वहारा वर्ग से, जो अभी जाग ही रहा था, अपनी मुक्ति मात्र रूसी हस्तक्षेप में पायी। ज़ार को यूरोपीय प्रतिक्रियावाद का सरदार घोषित कर दिया गया। आज वह गातचिना में अपने महल में बैठा है, क्रान्ति का युद्धबन्दी है[10] और रूस यूरोप में क्रान्तिकारी आन्दोलन का हरावल बन गया है।

कम्युनिस्ट घोषणापत्र ने आधुनिक बुर्जुआ सम्पत्ति सम्बन्धों के अवश्यम्भावी आसन्न विघटन की उद्घोषणा को अपना लक्ष्य बनाया था। परन्तु रूस में हम तेज़ी से विकसित हो रही पूँजीवादी व्यवस्था तथा बुर्जुआ भूस्वामित्व को देख सकते हैं जिसने अभी–अभी विकसित होना आरम्भ किया है, साथ ही, हम आधी से अधिक ऐसी भूमि पाते हैं जिस पर किसानों का समान स्वामित्व है। सवाल यह है – क्या रूसी *ओबश्चीन**, जो काफ़ी कमजोर हो जाने के बावजूद भूमि के आदिकालीन साझा स्वामित्व का रूप है, सीधे कम्युनिस्ट ढंग के साझा स्वामित्व के उच्चतर रूप में प्रवेश कर सकता है? या इसके विपरीत उसे भी क्या विघटन की उसी प्रक्रिया से गुज़रना पड़ेगा जो पश्चिम के ऐतिहासिक विकासक्रम के लिए लाक्षणिक है?

इस समय इस प्रश्न का एकमात्र उत्तर यह है – यदि रूसी क्रान्ति पश्चिम में सर्वहारा क्रान्ति के लिए इस तरह का संकेत बन जाये कि वे दोनों एक–दूसरे के परिपूरक बन सकें तो भूमि का वर्तमान रूसी सामुदायिक स्वामित्व कम्युनिस्ट विकास के लिए प्रस्थान–बिन्दु बन सकता है।

कार्ल मार्क्स फ़्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 21 जनवरी, 1882

---

* ग्राम समुदाय – *स.*

1883 के जर्मन संस्करण की भूमिका

अफ़सोस है कि वर्तमान संस्करण की भूमिका पर मुझे अकेले हस्ताक्षर करने पड़ रहे हैं। मार्क्स, जिनका यूरोप तथा अमेरिका का सारा मज़दूर वर्ग इतना ऋणी है जितना किसी और का नहीं है, हाईगेट समाधि-स्थली में विश्राम कर रहे हैं और उनकी समाधि के ऊपर घास के पहले पौधे बढ़ने भी लगे हैं। उनकी मृत्यु* के बाद *घोषणापत्र* को संशोधित करने अथवा अनुपूरित करने की बात तो और भी नहीं सोची जा सकती। इसलिए मैं यहाँ फिर निम्नलिखित बात स्पष्ट रूप से कहना ज़रूरी मानता हूँ।

घोषणापत्र में शुरू से लेकर आख़िर तक विद्यमान मूल चिन्तन, यह चिन्तन विशुद्ध रूप से मार्क्स का है कि प्रत्येक ऐतिहासिक युग का आर्थिक उत्पादन तथा उससे अनिवार्यत: उत्पन्न होने वाला सामाजिक ढाँचा उस युग के राजनीतिक तथा बौद्धिक इतिहास की आधारशिला हुआ करते हैं; कि इसके परिणामस्वरूप (भूमि के आदिम सामुदायिक स्वामित्व के विघटन के बाद से) पूरा इतिहास निरन्तर सामाजिक विकास की भिन्न-भिन्न मंज़िलों में वर्ग संघर्षों, शोषितों तथा शोषकों के बीच, शासितों तथा शासकों के बीच संघर्षों का इतिहास रहा है; कि यह संघर्ष अब उस मंज़िल में पहुँच चुका है जहाँ शोषित तथा उत्पीड़ित वर्ग (सर्वहारा वर्ग) पूरे समाज को शोषण, उत्पीड़न तथा वर्गसंघर्ष से सदा-सर्वदा के लिए मुक्त किये बिना उत्पीड़न तथा शोषण करने वाले वर्ग (बुर्जुआ वर्ग) से अपने को मुक्त नहीं कर सकता।

यह मूल विचार सबसे पहले मार्क्स, और केवल मार्क्स ने प्रस्तुत किया था।**

---

* मार्क्स का निधन 14 मार्च, 1883 को लन्दन में हुआ था।

** बाद में मैंने अंग्रेज़ी अनुवाद की भूमिका में लिखा था, "मेरी राय में यह प्रस्थापना इतिहास के क्षेत्र में अवश्यम्भावी रूप से वही करने जा रही है जो डारविन के सिद्धान्त ने जीव विज्ञान के क्षेत्र में किया था। इस प्रस्थापना की ओर हम दोनों 1845 से कुछ सालों तक धीरे-धीरे बढ़ते रहे थे। मैं उसकी ओर स्वतन्त्र रूप से कहाँ तक बढ़ सका, →

मैं यह बात पहले भी कई बार कह चुका हूँ; परन्तु अब यह ज़रूरी है कि स्वयं *घोषणापत्र* के प्राक्कथन में यह बात मौजूद रहे।

फ्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 28 जून, 1883

← इसे *इंग्लैण्ड में मज़दूर वर्ग की दशा* नामक मेरी रचना सर्वोत्तम ढंग से प्रदर्शित करती है। परन्तु जब मैं 1845 के वसन्त में मार्क्स से पुनः ब्रसेल्स में मिला तो इस विचार को वह पहले से ही विकसित कर चुके थे और उसे उन्होंने मेरे सामने जिस रूप में प्रस्तुत किया, वह प्राय: उतना ही स्पष्ट था जितने स्पष्ट रूप में मैंने यहाँ बयान किया है।" (*1890 के जर्मन संस्करण की भूमिका में एंगेल्स की टिप्पणी*)

1888 के अंग्रेज़ी संस्करण की भूमिका

घोषणापत्र कम्युनिस्ट लीग नामक मज़दूर संघ के कार्यक्रम के रूप में प्रकाशित किया गया था, जो आरम्भ में पूरी तरह जर्मन, आगे चलकर अन्तरराष्ट्रीय, और 1848 तक महाद्वीप की राजनीतिक परिस्थितियों के अन्तर्गत अपरिहार्य रूप से एक गुप्त संस्था थी। नवम्बर, 1847 में लन्दन में हुई लीग की कांग्रेस में मार्क्स और एंगेल्स को एक सम्पूर्ण सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पार्टी कार्यक्रम प्रकाशनार्थ तैयार करने का कार्य सौंपा गया। जनवरी, 1848 में जर्मन में रची गयी पाण्डुलिपि को 24 फ़रवरी की फ़्रांसीसी क्रान्ति के कुछ ही हफ़्ते पहले लन्दन में मुद्रक को भेजा गया था। एक फ़्रांसीसी अनुवाद पेरिस में 1848 के जून विद्रोह के कुछ ही पहले प्रकाशित किया गया। पहला अंग्रेज़ी अनुवाद, जो मिस हेलेन मैकफ़र्लेन ने किया था, 1850 में लन्दन में जॉर्ज जूलियन हॉर्नी के *रेड रिपब्लिकन* में प्रकट हुआ। डेनिश तथा पोलिश संस्करण भी प्रकाशित हो चुके थे।

जून, 1848 के पेरिस विद्रोह – सर्वहारा तथा बुर्जुआ के बीच पहली बड़ी लड़ाई – की पराजय ने यूरोपीय मज़दूर वर्ग की सामाजिक तथा राजनीतिक आकांक्षाओं को, कुछ समय के लिए, फिर से पार्श्वभूमि में धकेल दिया। उसके बाद से प्रभुत्व के लिए संघर्ष फ़रवरी क्रान्ति[11] के पहले की ही तरह फिर से केवल सम्पत्तिधारी वर्ग के भिन्न-भिन्न तबक़ों के बीच ही रह गया। मज़दूर वर्ग राजनीतिक सुविधाएँ पाने के वास्ते संघर्ष करने और मध्यवर्गीय आमूल परिवर्तनवादियों के चरम पक्ष की स्थिति में ही पहुँचने के लिए मजबूर हो गया था। जहाँ भी स्वतन्त्र सर्वहारा आन्दोलन जीवन के लक्षण प्रकट करते रहे, उन्हें निर्ममतापूर्वक कुचल दिया गया। इस प्रकार, प्रशियाई पुलिस ने कम्युनिस्ट लीग के केन्द्रीय बोर्ड को, जो उस समय कोलोन में स्थित था, खोज निकाला। सदस्य गिरफ़्तार कर लिये गये और 18 माह तक बन्दी रखने के बाद उन पर अक्टूबर, 1852 में मुक़दमा चलाया गया। यह मशहूर "कोलोन

कम्युनिस्ट मुक़दमा" 4 अक्टूबर से 12 नवम्बर तक चला; बन्दियों में से सात को तीन साल से लेकर छह साल तक एक क़िले में क़ैद की सज़ा दी गयी। सज़ा सुनाये जाने के फ़ौरन बाद बाक़ी सदस्यों द्वारा लीग को औपचारिक रूप से भंग कर दिया गया। जहाँ तक *घोषणापत्र* की बात है, ऐसा लगता था कि अब वह विस्मृति के गर्त में चला जायेगा।

जब यूरोप के मज़दूर वर्ग ने शासक वर्गों पर एक और प्रहार करने के लिए पर्याप्त शक्ति फिर से संचित कर ली, तो अन्तरराष्ट्रीय मज़दूर संघ[12] का जन्म हुआ। परन्तु यह संघ, जो यूरोप तथा अमरीका के सारे संघर्षशील सर्वहारा को एकजुट करने के निश्चित उद्देश्य से बनाया गया था, *घोषणापत्र* में निरूपित सिद्धान्तों को एकदम ही घोषित नहीं कर सकता था। इण्टरनेशनल के लिए ऐसे कार्यक्रम का होना अनिवार्य था, जो इतना व्यापक हो कि इंग्लैण्ड की ट्रेड-यूनियनों, फ़्रांस, बेल्जियम, इटली तथा स्पेन में प्रूदों के अनुयायियों[13] और जर्मनी में लासालपन्थियों*[14] को स्वीकार्य हो सके। मार्क्स को, जिन्होंने उस कार्यक्रम की रचना सभी पक्षों के लिए सन्तोषजनक ढंग से की, मज़दूर वर्ग के बौद्धिक विकास पर पूरा भरोसा था, जिसका संयुक्त कार्यकलाप तथा पारस्परिक विचार-विमर्श के फलस्वरूप पैदा होना अवश्यम्भावी था। स्वयं घटनाएँ और पूँजी के विरुद्ध संघर्ष में उतार-चढ़ाव – विजयों से भी ज़्यादा पराजयें – लोगों के दिमाग़ों में अपने विभिन्न प्रिय नीम-हकीमी नुस्ख़ों के अपर्याप्त होने की बात को बिठाये और मज़दूर वर्ग की मुक्ति की वास्तविक शर्तों को ज़्यादा पूरी तरह समझने का रास्ता प्रशस्त किये बिना नहीं रह सकते थे। और मार्क्स सही सिद्ध हुए। 1874 में इण्टरनेशनल ने अपने विघटन के समय मज़दूरों को जैसा छोड़ा, वे, उसने उन्हें 1864 में जैसा पाया था, उससे दूसरी ही क़िस्म के लोग थे। फ़्रांस में प्रूदोंपन्थ तथा जर्मनी में लासालपन्थ दम तोड़ रहे थे, और रूढ़िवादी ब्रिटिश ट्रेड-यूनियनें तक – हालाँकि उनमें से अधिकांश इण्टरनेशनल से अपना नाता कभी का तोड़ चुकी थीं – धीरे-धीरे उस बिन्दु पर पहुँच रही थीं, जहाँ पिछले साल स्वानसी में उनके अध्यक्ष* उनके नाम पर कह सके कि "महाद्वीपीय समाजवाद हमारे लिए आतंक नहीं

---

* लासाल स्वयं हमेशा यही कहते थे कि वह मार्क्स के शिष्य हैं और इसी नाते *घोषणापत्र* को आधार के रूप में ग्रहण करते हैं। परन्तु 1862-64 के अपने सार्वजनिक आन्दोलन में वह कभी राजकीय ऋणों से समर्थित सहकारी कार्यशालाओं की माँग से आगे नहीं गये। (*एंगेल्स की टिप्पणी*)

रह गया है।" वस्तुतः *घोषणापत्र* के सिद्धान्त सभी देशों के मज़दूरों के बीच काफ़ी प्रचलित हो चुके थे।

इस प्रकार, *घोषणापत्र* स्वयं फिर सामने आ गया। जर्मन मूलपाठ 1850 के बाद से कई बार स्विट्ज़रलैण्ड, इंग्लैण्ड तथा अमेरिका में फिर छप चुका था। 1872 में वह न्यूयार्क में अंग्रेज़ी में अनूदित हुआ, जहाँ अनुवाद *वुडहल एण्ड क्लैफ़्लिन्स वीकली* में प्रकाशित हुआ। इस अंग्रेज़ी रूपान्तर से एक फ़्रांसीसी अनुवाद न्यूयार्क के *ल सोशलिस्ट* में प्रकाशित हुआ। तब से न्यूनाधिक विकृत कम से कम दो और अंग्रेज़ी अनुवाद अमरीका में प्रकाशित हुए हैं तथा उनमें से एक का ब्रिटेन में पुनर्मुद्रण हुआ है। पहला रूसी अनुवाद, जो बाकुनिन ने किया था, 1863 के आस-पास जेनेवा में हर्ज़ेन के 'कोलोकोल' कार्यालय से प्रकाशित हुआ था; एक दूसरा, वीरांगना वेरा ज़ासूलिच का किया हुआ अनुवाद** 1882 में जेनेवा में भी प्रकाशित हुआ। एक नया डेनिश संस्करण कोपेनहैगन के *सोशल-डेमोक्रेटिस्क बिब्लियोथेक*, 1885 में छपा; एक ताज़ा फ़्रांसीसी अनुवाद पेरिस के *ल सोशलिस्ट*, 1885 में निकला था। इस फ़्रांसीसी अनुवाद से स्पेनी में एक रूपान्तरण किया गया और 1886 में मैड्रिड में प्रकाशित हुआ। जर्मन पुनर्मुद्रणों की बात करने की आवश्यकता नहीं है, उनकी संख्या कम से कम बारह है। मुझे बताया गया है कि आर्मीनियाई भाषा में अनुवाद, जिसे कुस्तुनतुनिया में कुछ महीने पहले प्रकाशित होना था, इसलिए प्रकाशित नहीं हो सका कि प्रकाशक मार्क्स के नाम से पुस्तक छापने से डरता था, जबकि अनुवादक ने उसे अपनी रचना कहने से इन्कार कर दिया। अन्य भाषाओं में अनुवादों की बात मैंने सुनी है, परन्तु उन्हें देखा नहीं है। इस प्रकार, *घोषणापत्र* का इतिहास काफ़ी हद तक आधुनिक मज़दूर आन्दोलन के इतिहास को प्रतिबिम्बित करता है; इस समय यह, निस्सन्देह, सबसे व्यापक, पूरे समाजवादी साहित्य में सबसे अधिक अन्तरराष्ट्रीय कृति है, साइबेरिया से लेकर कैलिफ़ोर्निया तक लाखों मेहनतकशों द्वारा स्वीकृत सामान्य कार्यक्रम है।

फिर भी, जब वह लिखा गया था, तब हम उसे *समाजवादी* घोषणापत्र नहीं कह सकते थे। 1847 में दो तरह के लोग समाजवादी माने जाते थे : एक

---

* डब्ल्यू. बेवन – *स.*

** बाद में स्वयं एंगेल्स ने Internationales aus dem Volksstaat (1871-75), बर्लिन, 1894 में प्रकाशित 'रूस में सामाजिक सम्बन्ध' शीर्षक लेख के उपसंहार में ठीक ही इंगित किया कि असली अनुवादक गे.वा.प्लेख़ानोव थे। – *स.*

ओर, विभिन्न यूटोपियाई पद्धतियों के अनुयायी – इंग्लैण्ड में ओवेनपन्थी[15] और फ्रांस में फूरियेपन्थी[16], ये दोनों पहले ही मात्र संकीर्ण पन्थों में बदल चुके थे और धीरे–धीरे ख़त्म हो रहे थे; दूसरी ओर थे अत्यधिक नानारूप सामाजिक नीमहकीम, जो पूँजी तथा मुनाफ़े को ज़रा भी क्षति पहुँचाये बिना, सब तरह की टाँकासाज़ी के बल पर सब क़िस्म की सामाजिक व्यथाओं का निवारण कर देने का दम भरते थे। ये दोनों ही तरह के लोग मज़दूर आन्दोलन के बाहर थे और समर्थन के लिए "शिक्षित" वर्गों की तरफ़ ही देखते थे। मज़दूर वर्ग का जो भी हिस्सा इसका क़ायल हो चुका था कि मात्र राजनीतिक क्रान्तियाँ पर्याप्त नहीं हैं और जो आमूल सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता का ऐलान कर चुका था, वह उस समय अपने को कम्युनिस्ट कहता था। यह भोंड़ा, अनगढ़, शुद्धत: सहज प्रेरणात्मक क़िस्म का कम्युनिज़्म था; फिर भी वह आधारभूत बिन्दु को स्पर्श करता था और मज़दूर वर्ग में वह इतना शक्तिशाली था कि उसने यूटोपियाई कम्युनिज़्म को जन्म दिया – फ्रांस में काबे के और जर्मनी में वाइटलिंग के यूटोपियाई कम्युनिज़्म[17] को। इस प्रकार, 1847 में समाजवाद एक मध्यवर्गीय आन्दोलन था, तो कम्युनिज़्म मज़दूरवर्गीय आन्दोलन था। कम से कम महाद्वीप में समाजवाद "प्रतिष्ठित" था, जबकि कम्युनिज़्म इसका ठीक उलटा था। और चूँकि हमारी धारणा बिल्कुल आरम्भ से ही यह थी कि "मज़दूर वर्ग की मुक्ति स्वयं मज़दूर वर्ग द्वारा हासिल की जानी चाहिए"[18], इसलिए इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं थी कि हमें इन दोनों में से कौन–सा नाम अपनाना चाहिए। और न तब से इस नाम का त्याग करने का ही हमें कभी ख़याल हुआ है।

हालाँकि *घोषणापत्र* हमारी संयुक्त रचना है, फिर भी मैं यह कहना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि इसकी आधारभूत प्रस्थापना, जो इसका नाभिक है, मार्क्स की है। वह प्रस्थापना यह है कि प्रत्येक ऐतिहासिक युग में आर्थिक उत्पादन तथा विनिमय का प्रचलित ढंग और उससे अनिवार्यत: उत्पन्न सामाजिक संरचना उस आधार को बनाते हैं, जिस पर उस युग के राजनीतिक तथा बौद्धिक इतिहास का निर्माण होता है और सिर्फ़ जिससे ही उसकी व्याख्या की जा सकती है; कि उसके परिणामस्वरूप मानवजाति का समूचा इतिहास (आदिम क़बायली समाज के, जिसमें भूमि पर सामूहिक स्वामित्व था, विघटन से लेकर) वर्ग संघर्षों का, शोषकों तथा शोषितों, शासकों तथा शासितों के बीच संघर्षों का इतिहास रहा है; कि इन वर्ग संघर्षों का इतिहास विकासक्रम

का एक ऐसा सिलसिला है, जिसमें आज वह मंज़िल आ गयी है, जहाँ शोषित तथा उत्पीड़ित वर्ग – सर्वहारा – पूरे समाज को सारे शोषण, उत्पीड़न, वर्ग विभेदों और वर्ग संघर्षों से सदा–सर्वदा के लिए मुक्त किये बिना अपने आपको शोषक तथा शासक वर्ग – बुर्जुआ वर्ग – के जुवे से मुक्त नहीं कर सकता।

बाद में मैंने अंग्रेज़ी अनुवाद की भूमिका में लिखा था, "मेरी राय में यह प्रस्थापना इतिहास के क्षेत्र में अवश्यम्भावी रूप से वही करने जा रही है जो डारविन के सिद्धान्त ने जीव विज्ञान के क्षेत्र में किया था। इस प्रस्थापना की ओर हम दोनों 1845 से कुछ सालों तक धीरे–धीरे बढ़ते रहे थे। मैं उसकी ओर स्वतन्त्र रूप से कहाँ तक बढ़ सका, *इंग्लैण्ड में मज़दूर वर्ग की दशा* नामक मेरी रचना सर्वोत्तम ढंग से प्रदर्शित करती है। परन्तु जब मैं 1845 के वसन्त में मार्क्स से पुनः ब्रसेल्स में मिला तो इस विचार को वह पहले से ही विकसित कर चुके थे और उसे उन्होंने मेरे सामने जिस रूप में प्रस्तुत किया, वह प्रायः उतना ही स्पष्ट था जितने स्पष्ट रूप में मैंने यहाँ बयान किया है।

1872 में जर्मन संस्करण की हमारी संयुक्त भूमिका से मैं निम्नलिखित अंश उद्धृत कर रहा हूँ :

"पिछले पच्चीस वर्षों के दौरान परिस्थितियाँ चाहे जितनी बदल गयी हों तो भी इस दस्तावेज़ में निरूपित आम सिद्धान्त समग्र रूप में आज भी उतने ही सही हैं जितने कि वे पहले थे। तफ़सीलों में एकाध जगह छोटा–मोटा सुधार किया जा सकता है। जैसाकि *घोषणापत्र* में कहा भी जा चुका है कि सिद्धान्तों का क्रियान्वयन, हर जगह और हमेशा विद्यमान ऐतिहासिक परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। इसीलिए दूसरे अध्याय के अन्त में प्रस्तावित क्रान्तिकारी कार्रवाइयों पर हमने विशेष ज़ोर नहीं दिया है। कई पहलुओं के दृष्टिगत आज यह भाग भिन्न रूप में लिखा जाता। 1848 से आधुनिक उद्योग की ज़बरदस्त तरक़्क़ी और उसके साथ मज़दूर वर्ग के संगठन में आये सुधार और विस्तार को देखते हुए**; इसके साथ मज़दूर वर्ग के पार्टी संगठन में वृद्धि के मद्देनज़र; फ़रवरी क्रान्ति के दौरान प्राप्त अनुभव के मद्देनज़र और उससे भी ज़्यादा पेरिस कम्यून के दो माह के अस्तित्व के दौरान, जब पहली बार सर्वहारा

---

* *The Condition of the Working Closs in England in 1844*. By Frederick Engels. Translated by Florence K. Wishnewetzky, New York, Lowell-London, W. Reeves, 1888, (*एंगेल्स की टिप्पणी*)

** 1872 के जर्मन मूलपाठ में यह वाक्य किंचित दूसरे शब्दों में व्यक्त किया गया है। – *स.*

राजनीतिक सत्ता पर काबिज़ रहा था, प्राप्त व्यावहारिक अनुभव के मद्देनज़र, इस कार्यक्रम की कुछ तफ़सीलें पुरानी पड़ गयी हैं। कम्यून ने एक बात तो ख़ास तौर से साबित कर दी, वह यह कि 'मज़दूर वर्ग बनी–बनायी राज्य मशीनरी पर क़ब्ज़ा करके ही उसे अपने उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकता।' (देखिये, 'फ़्रांस में गृहयुद्ध; अन्तरराष्ट्रीय मज़दूर संघ की जनरल कौंसिल की चिट्ठी', लन्दन, ट्रूलव, 1871, पृष्ठ 15*, जहाँ इस बात की और विस्तृत विवेचना की गयी है।) इसके अलावा, यह स्वतःस्पष्ट है कि इसमें की गयी समाजवादी साहित्य की आलोचना वर्तमान समय में इसलिए भी अपूर्ण है कि इसमें 1847 तक प्रकाशित रचनाओं का ही ज़िक्र है। इसके अलावा विभिन्न विरोधी पार्टियों के साथ कम्युनिस्टों के सम्बन्ध के बारे में जो टिप्पणियाँ की गयी हैं (देखें अध्याय चार), वे यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से अभी भी प्रासंगिक हैं तथापि वे व्यवहार में पुरानी पड़ गयी हैं क्योंकि तब से राजनीतिक परिस्थितियों में समग्र परिवर्तन हो चुका है और इसलिए भी कि जिन पार्टियों का यहाँ ज़िक्र किया गया है उनमें से अधिकांश पार्टियों का, ऐतिहासिक विकास के दौरान, अस्तित्व समाप्त हो गया है।

"इस बीच *घोषणापत्र* एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ बन गया है जिसमें परिवर्तन करने का हमें कोई अधिकार नहीं रह गया है।"

प्रस्तुत अनुवाद श्री सैमुअल मूर का है, जो मार्क्स की 'पूँजी' के अधिकांश के अनुवादक हैं। हमने मिलकर इसे संशोधित किया है और मैंने व्याख्यात्मक ऐतिहासिक टिप्पणियाँ जोड़ दी हैं।

फ़्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 30 जनवरी, 1888

---

* का. मार्क्स, फ़्रे. एंगेल्स, *संकलित रचनाएँ*, तीन खण्डों में, खण्ड 2, भाग 1, प्रगति प्रकाशन, मास्को, 1977, पृष्ठ 285 – *स.*

1890 के जर्मन संस्करण की भूमिका

उपरिलिखित पंक्तियों* के लिखे जाने के बाद *घोषणापत्र* के एक नये जर्मन संस्करण का प्रकाशन आवश्यक हो गया है तथा *घोषणापत्र* के साथ भी कई बातें ऐसी हो चुकी हैं, जिन्हें यहाँ दर्ज किया जाना चाहिए।

द्वितीय रूसी अनुवाद, जो वेरा ज़ासूलिच ने किया है, जेनेवा में 1882 में प्रकाशित हुआ था, उस संस्करण की भूमिका मार्क्स तथा मैंने लिखी थी। दुर्भाग्यवश मूल जर्मन पाण्डुलिपि कहीं खो गयी है, इसलिए मुझे रूसी से दोबारा अनुवाद करना पड़ेगा। लेकिन इससे मूलपाठ में किसी तरह का सुधार होने नहीं जा रहा है!** उसमें लिखा हुआ है :

> "कम्युनिस्ट पार्टी के *घोषणापत्र* के बाकुनिन द्वारा किये गये अनुवाद का प्रथम रूसी संस्करण सातवें दशक के आरम्भ में **'कोलोकोल'** के मुद्रण कार्यालय से प्रकाशित हुआ था। उस समय पश्चिम *घोषणापत्र* के रूसी संस्करण में केवल साहित्यिक कौतुक ही देख सकता था। परन्तु अब इस तरह का दृष्टिकोण असम्भव है।
>
> "उस समय (दिसम्बर 1847) सर्वहारा आन्दोलन का कितना सीमित दायरा था, उसे *घोषणापत्र* का आख़िरी अध्याय – विभिन्न विरोधी पार्टियों के सम्बन्ध में कम्युनिस्टों की स्थिति – सर्वाधिक स्पष्टता के साथ प्रदर्शित कर देता है। इसमें रूस तथा संयुक्त राज्य अमेरिका ही ग़ायब हैं। यह वह ज़माना था जब रूस सारे यूरोपीय प्रतिक्रियावाद की आख़िरी बड़ी आरक्षित शक्ति था, जब अमेरिका ने आप्रवासन के माध्यम से यूरोप की सारी बेशी सर्वहारा शक्तियों को अपने अन्दर खपा लिया था। दोनों देश यूरोप को कच्चा माल मुहैया कर रहे थे और साथ ही वे उसके औद्योगिक माल की

* एंगेल्स का आशय 1883 के जर्मन संस्करण की अपनी भूमिका से है। – *स.*

** मार्क्स और एंगेल्स द्वारा लिखित इस भूमिका की मूल पाण्डुलिपि खोज ली गयी है और यह मास्को में मार्क्सवाद-लेनिनवाद संस्थान के अभिलेखागार में रखी हुई है। इस भूमिका का यह अनुवाद इस जर्मन मूल पाठ के आधार पर ही किया गया है। – *स.*

खपत की मण्डियाँ भी थे। उस समय दोनों इस या उस रूप में विद्यमान यूरोपीय व्यवस्था के आधार-स्तम्भ थे।

"आज स्थिति कितनी बदल चुकी है! ठीक यही यूरोपीय आप्रवासन अथाह कृषि उत्पादन के लिए उत्तरी अमेरिका के वास्ते उपयुक्त सिद्ध हुआ, जिसके साथ होड़, आज छोटे-बड़े सारे यूरोपीय भूस्वामित्व की नींवों को ही हिला रही है। इसके अलावा उसने अमेरिका को अपने विपुल औद्योगिक संसाधन इतनी स्फूर्ति के साथ तथा इतने बड़े पैमाने पर अपने लाभार्थ उपयोग में लाने में सक्षम बनाया कि उससे पश्चिमी यूरोप और ख़ास तौर पर इंग्लैण्ड की अब तक मौजूद इज़ारेदारी की जल्द ही कमर टूट जायेगी। दोनों परिस्थितियों का स्वयं अमेरिका पर क्रान्तिकारी ढंग से प्रभाव पड़ रहा है। किसानों का लघु तथा मध्यम दर्जे का भूस्वामित्व पूरी राजनीतिक संरचना का आधार है, वह क़दम-ब-क़दम विराट फ़ार्मों के साथ होड़ में ढहता जा रहा है। इसके साथ ही औद्योगिक क्षेत्रों में पहली बार बहुत बड़ी संख्या वाले सर्वहारा वर्ग का तथा पूँजियों के कल्पनातीत संकेन्द्रण का विकास हो रहा है।

"और अब रूस! 1848-1849 की क्रान्ति के दौरान यूरोपीय राजाओं ने ही नहीं, वरन यूरोपीय बुर्जुआ वर्ग ने भी सर्वहारा वर्ग से, जो अभी जाग ही रहा था, अपनी मुक्ति मात्र रूसी हस्तक्षेप में पायी। ज़ार को यूरोपीय प्रतिक्रियावाद का सरदार घोषित कर दिया गया। आज वह गातचिना में अपने महल में बैठा है, क्रान्ति का युद्धबन्दी है और रूस यूरोप में क्रान्तिकारी आन्दोलन का हरावल बन गया है।

"*कम्युनिस्ट घोषणापत्र* ने आधुनिक बुर्जुआ सम्पत्ति सम्बन्धों के अवश्यम्भावी आसन्न विघटन की उद्‌घोषणा को अपना लक्ष्य बनाया था। परन्तु रूस में हम तेज़ी से विकसित हो रही पूँजीवादी व्यवस्था तथा बुर्जुआ भूस्वामित्व को देख सकते हैं जिसने अभी-अभी विकसित होना आरम्भ किया है, साथ ही, हम आधी से अधिक ऐसी भूमि पाते हैं जिस पर किसानों का समान स्वामित्व है। सवाल यह है – क्या रूसी ओब्श्चीन, जो काफ़ी कमज़ोर हो जाने के बावजूद भूमि के आदिकालीन साझा स्वामित्व का रूप है, सीधे कम्युनिस्ट ढंग के साझा स्वामित्व के उच्चतर रूप में प्रवेश कर सकता है? या इसके विपरीत उसे भी क्या विघटन की उसी प्रक्रिया से गुज़रना पड़ेगा जो पश्चिम के ऐतिहासिक विकासक्रम के लिए

लाक्षणिक है?

"इस समय इस प्रश्न का एकमात्र उत्तर यह है – यदि रूसी क्रान्ति पश्चिम में सर्वहारा क्रान्ति के लिए इस तरह का संकेत बन जाये कि वे दोनों एक-दूसरे के परिपूरक बन सकें तो भूमि का वर्तमान रूसी सामुदायिक स्वामित्व कम्युनिस्ट विकास के लिए प्रस्थान-बिन्दु बन सकता है।

कार्ल मार्क्स फ़्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 21 जनवरी, 1882"

लगभग उसी वक़्त जेनेवा में एक नया पोलिश संस्करण प्रकाशित हुआ : Manifest Kommunistyczny.

इसके अलावा 1885 में कोपेनहेगेन की सोशल डेमोक्रेटिक लाइब्रेरी द्वारा एक नया डेनिश अनुवाद प्रकाशित हुआ। दुर्भाग्यवश वह पर्याप्त रूप से पूर्ण नहीं है; कतिपय नितान्त महत्त्वपूर्ण अंशों को, जिन्होंने लगता है कि अनुवादक के सामने कठिनाइयाँ पैदा कीं, छोड़ दिया गया है। इसके अलावा उसमें यत्र-तत्र लापरवाही के चिह्न मिलते हैं; वे इस कारण आँखों को और भी ज़्यादा खटकते हैं कि अनुवाद से पता चलता है कि यदि अनुवादक ने थोड़ी-सी और मेहनत की होती तो वह बहुत सुन्दर काम सम्पन्न करते।

1885 में एक नया फ़्रांसीसी अनुवाद *ल सोशलिस्त* में छपा; वह अब तक के अनुवादों में सर्वोत्तम है।

इस फ़्रांसीसी अनुवाद से उसी वर्ष एक स्पेनिश अनुवाद पहले मैड्रिड के *एल सोशलिस्ता* में छपा तथा फिर एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया गया – *Manifesto del Partido Comunista*, कार्ल मार्क्स तथा फ़्रेडरिक एंगेल्स, मैड्रिड, *एल सोशलिस्ता* प्रकाशन गृह, एर्नार कोर्तेस मार्ग, 8।

इस दिलचस्प तथ्य की भी चर्चा कर दूँ कि 1887 में कुस्तुनतुनिया के एक प्रकाशक से एक आर्मीनियाई अनुवाद की पाण्डुलिपि छापने का प्रस्ताव किया गया। परन्तु उस भले आदमी में मार्क्स के नाम से जुड़ी कोई चीज़ छापने की हिम्मत नहीं हुई। उसने अनुवादक को लेखक के रूप में अपना नाम देने का सुझाव दिया, परन्तु उसने ऐसा करने से इन्कार कर दिया।

अमेरिका में किये गये कई अनुवाद इंग्लैण्ड में सिलसिलेवार छपते रहे जो न्यूनाधिक रूप से अशुद्ध थे। अन्ततः प्रामाणिक अनुवाद 1888 में तैयार हो गया। यह मेरे मित्र सैमुअल मूर का काम था और उसे प्रेस में भेजने से पहले हम दोनों ने मिलकर उस पर नज़र डाली। उसका नाम है, "*कम्युनिस्ट पार्टी*

का घोषणापत्र, कार्ल मार्क्स तथा फ़्रेडरिक एंगेल्स। प्रामाणिक अंग्रेज़ी अनुवाद, सम्पादन तथा नोट्स फ़्रेडरिक एंगेल्स द्वारा, 1888, लन्दन, विलियम रीव्स, 185, फ़्लीट स्ट्रीट, ई.सी.।" मैंने उस संस्करण के कुछ नोट्स प्रस्तुत संस्करण में शामिल किये हैं।

घोषणापत्र का अपना एक अलग इतिहास रहा है। प्रकाशन के साथ ही उसका वैज्ञानिक समाजवाद के हरावलों द्वारा, जिनकी संख्या अभी बिल्कुल ही अधिक न थी, उत्साहपूर्ण स्वागत हुआ (जैसाकि पहली भूमिका में उल्लिखित अनुवादों द्वारा स्पष्ट है), किन्तु थोड़े ही समय बाद, जून 1848 में पेरिस के मज़दूरों की पराजय से शुरू होने वाली प्रतिक्रिया के साथ उसे पृष्ठभूमि में ढकेल दिया गया, और अन्त में जब नवम्बर 1852 में कोलोन के कम्युनिस्टों को सज़ा दी गयी तो वह "क़ानूनी तौर पर" बहिष्कृत कर दिया गया। फ़रवरी क्रान्ति के साथ जिस मज़दूर आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था, उसके सार्वजनिक रंगमंच से ओझल हो जाने के बाद *घोषणापत्र* भी पृष्ठभूमि में चला गया।

जब यूरोप के मज़दूर वर्ग ने शासक वर्गों की सत्ता पर एक और प्रहार करने के लिए पर्याप्त शक्ति फिर से संचित कर ली, तो अन्तरराष्ट्रीय मज़दूर संघ का जन्म हुआ। उसका उद्देश्य यूरोप और अमेरिका के समूचे जुझारू मज़दूर वर्ग को *एक* विशाल सेना के रूप में एकजुट करना था। इसलिए संघ *घोषणापत्र* में स्थापित सिद्धान्तों को प्रस्थान-बिन्दु मानकर नहीं चल सकता था। उसका ऐसा कार्यक्रम होना लाज़िमी था जिससे इंग्लैण्ड की ट्रेड-यूनियनों, फ़्रांस, बेल्जियम, इटली और स्पेन के प्रूदोंपन्थियों तथा जर्मनी के लासालपन्थियों* के लिए दरवाज़ा बन्द न हो जाये। इस तरह के कार्यक्रम को – इण्टरनेशनल की नियमावली के प्राक्कथन को – मार्क्स ने बड़ी ख़ूबी के साथ लिखा जिसे बाकुनिन और अराजकतावादियों तक ने माना। जहाँ तक *घोषणापत्र* में निरूपित सिद्धान्तों की अन्तिम विजय का प्रश्न है, मार्क्स ने मज़दूर वर्ग के बौद्धिक विकास पर, जो संयुक्त कार्यकलाप तथा पारस्परिक विचार-विमर्श के फलस्वरूप निश्चित रूप से पैदा होता, पूर्णतया भरोसा

* लासाल स्वयं हमेशा यही कहते थे कि वह मार्क्स के शिष्य हैं और इसी नाते *घोषणापत्र* को आधार के रूप में ग्रहण करते हैं। मगर उनके उन अनुयायियों की बात बिल्कुल ही अलग थी, जो राजकीय ऋणों से समर्थित उत्पादकों की सहकारी समितियों की लासाल की माँग से आगे नहीं जाते थे और जो समूचे मज़दूर वर्ग को राजकीय सहायता के समर्थकों और आत्मनिर्भरता के समर्थकों में बाँट देते थे। (*एंगेल्स की टिप्पणी*)

किया। एकजुट कार्रवाइयों और विचार–विमर्श से प्रशिक्षित होकर मज़दूर धीरे–धीरे इन सिद्धान्तों को समझेंगे और अपनायेंगे। घटनाएँ तथा पूँजी के विरुद्ध संघर्ष के बराबर उतार–चढ़ाव – विजयों से ज़्यादा पराजयें – लड़ाकों के सामने यह बात प्रत्यक्ष किये बिना नहीं रह सकती थीं कि उनके विभिन्न प्रिय नीम–हकीमी नुस्ख़े अपर्याप्त हैं जिन पर वे अभी तक टिके हुए थे और उनके दिमाग़ों को मज़दूरों की मुक्ति की वास्तविक शर्तों को पूरी तरह समझने के लिए अधिक ग्रहणशील बनाये बिना नहीं सकती थीं। और मार्क्स सही सिद्ध हुए। 1874 में जब इण्टरनेशनल भंग हो गया तो उस समय का मज़दूर वर्ग, 1864 की तुलना में, जब उसकी स्थापना हुई थी, एकदम भिन्न था। लैटिन देशों में प्रूदोंपन्थ और जर्मनी का विशिष्ट लासालपन्थ दम तोड़ रहे थे, और घोर दकियानूसी ब्रिटिश ट्रेड यूनियनें तक धीरे–धीरे उस बिन्दु पर पहुँच रही थीं जहाँ 1887 में स्वानसी कांग्रेस में उनके अध्यक्ष उसके नाम पर यह एलान कर सके कि "महाद्वीपीय समाजवाद हमारे लिए आतंक नहीं रह गया है"। जबकि 1887 तक महाद्वीपीय समाजवाद लगभग पूर्णतः वही सिद्धान्त था जिसकी *घोषणापत्र* ने घोषणा की थी। चुनाँचे *घोषणापत्र* का इतिहास 1848 के बाद से आधुनिक मज़दूर आन्दोलन के इतिहास को एक हद तक प्रतिबिम्बित करता है। आज तो निस्सन्देह *घोषणापत्र* समस्त समाजवादी साहित्य की सबसे अधिक प्रचलित, सबसे अधिक अन्तरराष्ट्रीय कृति है और वह साइबेरिया से लेकर कैलिफ़ोर्निया तक सभी देशों के करोड़ों मज़दूरों का समान कार्यक्रम है।

फिर भी उसके प्रकाशन के समय हम उसे *समाजवादी घोषणापत्र* नहीं कह सकते थे। 1847 में दो तरह के लोग समाजवादी माने जाते थे। एक ओर विभिन्न कल्पनावादी पद्धतियों के अनुयायी – ख़ासकर इंग्लैण्ड में ओवेनपन्थी और फ़्रांस में फ़ूरियेपन्थी, ये दोनों मात्र मरणासन्न संकीर्ण पन्थ बनकर रह गये थे; दूसरी ओर थे नाना प्रकार के सामाजिक नीम–हकीम, जो पूँजी तथा मुनाफ़े को जरा भी क्षति पहुँचाये बिना, सब तरह की टाँकासाज़ी के बल पर सब क़िस्म की सामाजिक बुराइयों का अन्त कर देना चाहते थे। ये दोनों ही तरह के लोग मज़दूर आन्दोलन के बाहर थे तथा समर्थन के लिए "शिक्षित" वर्गों पर आस लगाये बैठे रहते थे। इसके विपरीत, मज़दूर वर्ग के जिस हिस्से को यह पूरा विश्वास हो चुका था कि मात्र राजनीतिक क्रान्तियाँ पर्याप्त नहीं हैं तथा जो समाज के आमूल पुनर्निर्माण की माँग करता था, वह उस समय अपने को कम्युनिस्ट कहता था। यह भोंड़ा, बेडौल, विशुद्ध रूप से सहज प्रेरणात्मक

क़िस्म का कम्युनिज़्म था; फिर भी उसमें इतनी शक्ति थी कि उसने काल्पनिक कम्युनिज़्म की दो पद्धतियों को जन्म दिया – फ़्रांस में काबे के "इकारियन" कम्युनिज़्म और जर्मनी में वाइटलिंग के कम्युनिज़्म को। 1847 में समाजवाद बुर्जुआ आन्दोलन तथा कम्युनिज़्म मज़दूर आन्दोलन था। कम से कम महाद्वीप में समाजवाद काफ़ी प्रतिष्ठाप्राप्त था जबकि कम्युनिज़्म इसके ठीक विपरीत स्थिति में था। और चूँकि हमारी उस समय ही यह पक्की राय बन चुकी थी कि "मज़दूर वर्ग की मुक्ति स्वयं मज़दूर वर्ग का कार्य ही हो सकता है", इसलिए इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं थी कि हमें इन दोनों में से कौन–सा नाम अपनाना चाहिए था। तभी से इस नाम का त्याग करने का हमें कभी ख़याल नहीं आया।

"दुनिया के मज़दूरो, एक हो!" जब यह नारा हमने आज से बयालीस साल पहले – प्रथम पेरिस क्रान्ति के ठीक पहले जब सर्वहारा वर्ग स्वयं अपनी माँगों को लेकर सामने आया था – बुलन्द किया था, तब बहुत थोड़े लोगों ने उसे प्रतिध्वनित किया था। किन्तु 28 सितम्बर, 1864 को पश्चिमी यूरोप के अधिकांश देशों के सर्वहाराओं ने मिलकर अन्तरराष्ट्रीय मज़दूर संघ की स्थापना की जिसकी स्मृति गौरवपूर्ण है। यह सच है कि इण्टरनेशनल स्वयं केवल नौ साल जीवित रहा। किन्तु उसने सभी देशों के सर्वहाराओं का जो अविनाशी एका क़ायम कर दिया था वह आज भी जीवित है और पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली है। इसका सबसे बड़ा साक्षी आज का यह दिन है, क्योंकि आज के दिन[19], जब मैं ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ, यूरोप और अमेरिका के सर्वहारा अपनी जुझारू शक्तियों का पुनरीक्षण कर रहे हैं जो पहली बार *एक* सेना की तरह, *एक* झण्डे के नीचे, *एक* तात्कालिक उद्देश्य के लिए – 1866 में इण्टरनेशनल की जेनेवा कांग्रेस द्वारा और फिर 1889 में पेरिस की मज़दूर कांग्रेस द्वारा घोषित आठ घण्टे के काम के दिन को क़ानून द्वारा स्थापित कराने के उद्देश्य से – मैदान में उतारी गयी हैं। और आज के दृश्य से सभी देशों के पूँजीपतियों और ज़मींदारों की आँखें खुल जायेंगी और वे देख लेंगे कि सभी देशों के मेहनतकश लोग आज सचमुच एक हैं।

काश, आज मार्क्स भी अपनी आँखों से इस दृश्य को देखने के लिए मेरे साथ होते!

फ़्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 1 मई 1890

1892 के पोलिश संस्करण की भूमिका

कम्युनिस्ट घोषणापत्र का एक नया पोलिश संस्करण निकालना आवश्यक हो गया है, यह तथ्य नाना प्रकार के विचारों को जन्म देता है।

सबसे पहले यह उल्लेखनीय है कि इधर *घोषणापत्र* यूरोपीय महाद्वीप में बड़े पैमाने के उद्योग के विकास का एक तरह का सूचक बन गया है। किसी देशविशेष में बड़े पैमाने का उद्योग जितना विकसित होता है, उस देश के मज़दूरों में सम्पत्तिधारी वर्गों के सम्बन्ध में मज़दूर वर्ग के रूप में अपनी स्थिति का ज्ञान हासिल करने की माँग उतनी ही बढ़ती जाती है। उनके मध्य समाजवादी आन्दोलन उतना ही फैलता जाता है तथा *घोषणापत्र* की माँग उतनी ही बढ़ती जाती है। इस तरह किसी भी देश में उसकी भाषा में *घोषणापत्र* का जितनी संख्या में प्रसार होता है, उससे मज़दूर आन्दोलन की स्थिति को ही नहीं, वरन बड़े पैमाने के उद्योग के विकास के परिमाण को भी मापा जा सकता है।

इसलिए नया पोलिश संस्करण उद्योग की निश्चित प्रगति इंगित करता है। इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं है कि दस साल पहले प्रकाशित संस्करण के बाद वस्तुतः यह प्रगति हुई है। रूसी पोलैण्ड, कांग्रेसीय पोलैण्ड[20], रूसी साम्राज्य का बहुत बड़ा औद्योगिक क्षेत्र बन गया है। बड़े पैमाने का रूसी उद्योग जहाँ यत्र–तत्र बिखरा हुआ है – एक हिस्सा फ़िनलैण्ड की खाड़ी के आसपास, दूसरा मध्य भाग में (मास्को तथा व्लादीमिर में), तीसरा काला सागर और अज़ोव सागर के तटवर्ती क्षेत्रों तथा और भी अन्य स्थानों में – वहाँ पोलिश उद्योग को अपेक्षाकृत छोटे इलाक़े में ठूँस दिया गया है और वह इस तरह के संकेन्द्रण के लाभ तथा हानि दोनों भोग रहा है। रूसी उद्योगपतियों ने लाभों को उस समय स्वीकारा जब उन्होंने पोलों को रूसी बनाने की उत्कट इच्छा के बावजूद पोलैण्ड के विरुद्ध संरक्षणात्मक सीमाशुल्कों की माँग की। हानि – पोलिश उद्योगपतियों तथा रूसी सरकार के लिए – पोलिश मज़दूरों के बीच समाजवादी विचारों के

द्रुत प्रसार तथा *घोषणापत्र* की बढ़ती हुई माँग में प्रत्यक्ष है।

परन्तु पोलिश उद्योग की यह तीव्र गति, जो रूस के उद्योग के विकास की रफ़्तार को पीछे छोड़ रही है, अपनेआप में पोलिश जनता की अनन्त जीवन्तता तथा उसके आसन्न राष्ट्रीय पुनरुत्थान की नयी गारण्टी है। और एक स्वतन्त्र, मज़बूत पोलैण्ड का पुनरुत्थान ऐसा मामला है जो केवल पोलों से ही नहीं, वरन हम सबसे भी सरोकार रखता है। यूरोपीय राष्ट्रों का ईमानदारी भरा अन्तरराष्ट्रीय सहयोग तभी सम्भव है जब इनमें से हर राष्ट्र अपने घर में पूर्णतया स्वायत्तशासी हो। 1848 की क्रान्ति ने, जिसने सर्वहारा के झण्डे के नीचे सर्वहारा योद्धाओं से केवल बुर्जुआ वर्ग का काम कराया, अपनी वसीयत के निष्पादकों – लूई बोनापार्त तथा बिस्मार्क – के ज़रिये इटली, जर्मनी तथा हंगरी के लिए भी आज़ादी हासिल की; परन्तु पोलैण्ड को, जिसके द्वारा 1791 से क्रान्ति के लिए किया जाने वाला कार्य इन तीनों देशों के कुल कार्य से अधिक था, उस समय जब उसने 1863 में दस गुना अधिक रूसी शक्ति के सामने शिकस्त खायी[21], अपने संसाधनों के सहारे छोड़ दिया गया। अभिजात वर्ग पोलिश स्वतन्त्रता को न तो बरकरार रख सका और न उसे फिर से हासिल कर सका। बुर्जुआ वर्ग के लिए यह स्वतन्त्रता आज कम से कम ऐसी तो है ही जिसके प्रति वह उदासीन रह सकता है। फिर भी यूरोपीय राष्ट्रों के सामंजस्यपूर्ण सहयोग के लिए यह आवश्यक है। उसे केवल तरुण पोलिश सर्वहारा वर्ग हासिल कर सकता है और उसके हाथों में वह सुरक्षित भी है। बात यह है कि यूरोप के बाक़ी सभी मज़दूरों के लिए पोलैण्ड की स्वतन्त्रता उतनी ही आवश्यक है जितनी वह स्वयं पोलिश मज़दूरों के लिए है।

फ़्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 10 फ़रवरी 1892

1893 के इतालवी संस्करण की भूमिका

इतालवी पाठक के नाम

कहा जा सकता है कि *कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र* के प्रकाशन का 18 मई 1848 के दिन के साथ, मिलान तथा बर्लिन में उन क्रान्तियों के दिन के साथ संयोग हुआ है जो उन दो राष्ट्रों के सशस्त्र विद्रोह थे जिनमें से एक तो यूरोपीय महाद्वीप के तथा दूसरा भूमध्यसागर क्षेत्र के केन्द्र में स्थित है। ये दो राष्ट्र तब तक फूट तथा आन्तरिक कलह के कारण दुर्बल पड़े हुए थे तथा इस कारण वे विदेशी आधिपत्य के चंगुल में फँस गये। जहाँ इटली ऑस्ट्रिया के सम्राट के मातहत था, वहाँ जर्मनी रूसी साम्राज्य के ज़ारों के जुवे के मातहत था, जो अधिक परोक्ष होते हुए भी कम कारगर नहीं था। 18 मार्च 1848 के नतीजों ने इटली तथा जर्मनी दोनों का यह कलंक धो दिया; अगर 1848 से 1871 तक ये दो महान राष्ट्र पुनर्गठित हुए और फिर से स्वतन्त्र हो गये तो इसकी वजह, जैसाकि मार्क्स कहा करते थे, यह थी कि जिन लोगों ने 1848 की क्रान्ति को कुचला था वे ही न चाहते हुए भी उसकी वसीयत के निष्पादक बन गये।

वह क्रान्ति सर्वत्र मज़दूर वर्ग का कार्य थी। मज़दूर वर्ग ने ही बैरीकेडों का निर्माण किया था और अपना ख़ून देकर इस क्रान्ति की क़ीमत चुकायी थी। सिर्फ़ पेरिस के मज़दूर ही ऐसे थे जिनका सरकार का तख़्ता पलटने के पीछे बुर्जुआ वर्ग के पूरे शासन को उखाड़ फेंकने का एक निश्चित इरादा था। वे अपने वर्ग तथा बुर्जुआ वर्ग के बीच विद्यमान अपरिहार्य विरोध से अवश्य अवगत थे, फिर भी न देश की आर्थिक प्रगति और न आम फ़्रांसीसी मज़दूरों का बौद्धिक विकास अभी ऐसी मंज़िल पर पहुँच पाये थे जो सामाजिक पुनर्निर्माण को सम्भव बनाते। अतः, अन्ततोगत्वा क्रान्ति के फल बुर्जुआ वर्ग

द्वारा बटोरे गये। दूसरे देशों में, इटली, जर्मनी तथा ऑस्ट्रिया में, मज़दूर बुर्जुआ वर्ग को सत्ता तक पहुँचाने के अलावा और कुछ नहीं कर सके। परन्तु किसी भी देश में बुर्जुआ वर्ग का शासन राष्ट्रीय स्वाधीनता के बिना असम्भव है। अत: 1848 की क्रान्ति भी उन राष्ट्रों की एकता तथा स्वायत्तता को अपने साथ–साथ लेकर आयी थी जिसका इटली, जर्मनी और हंगरी में अभाव था। अब पोलैण्ड की बारी है।

इस तरह 1848 की क्रान्ति भले ही समाजवादी क्रान्ति न रही हो, परन्तु उसने उसके लिए पथ प्रशस्त किया, उसकी आधारभूमि तैयार की। सभी देशों में बड़े पैमाने के उद्योग के विकास के कारण बुर्जुआ समाज ने पिछले पैंतालीस वर्षों के दौरान सर्वत्र बहुत बड़ी तादाद वाले, संकेन्द्रित तथा सशक्त सर्वहारा वर्ग का निर्माण किया। इस तरह उसने, *घोषणापत्र* के शब्दों में, अपनी क़ब्र खोदने वाले तैयार कर दिये। हर राष्ट्र की स्वायत्तता तथा एकता को पुनर्स्थापित किये बिना सर्वहारा वर्ग की अन्तरराष्ट्रीय एकता अथवा समान लक्ष्यों की प्राप्ति में इन राष्ट्रों का शान्तिपूर्ण सचेतन सहयोग हासिल करना असम्भव होगा। ज़रा 1848 के पूर्व की राजनीतिक अवस्थाओं में इतालवी, हंगेरियाई, जर्मन, पोलिश तथा रूसी मज़दूरों की संयुक्त अन्तरराष्ट्रीय कार्रवाई की कल्पना तो कीजिये।

इसलिए 1848 की लड़ाइयाँ बेकार नहीं लड़ी गयीं। उस क्रान्तिकारी युग से हमें अलग करने वाले पैंतालीस वर्ष भी निरुद्देश्य नहीं रहे। फल परिपक्व हो रहे हैं, और मैं केवल यही कामना करता हूँ कि इस इतालवी अनुवाद का प्रकाशन इतालवी सर्वहारा की विजय के लिए उसी तरह शुभ हो जिस तरह मूल का प्रकाशन अन्तरराष्ट्रीय क्रान्ति के लिए शुभ रहा।

घोषणापत्र अतीत में पूँजीवाद द्वारा अदा की गयी क्रान्तिकारी भूमिका के साथ पूरा न्याय करता है। पहला पूँजीवादी राष्ट्र इटली था। सामन्ती मध्ययुग के अन्त तथा आधुनिक पूँजीवादी युग के समारम्भ का द्योतक एक विराट मानव है, वह है एक इतालवी दान्ते, मध्ययुग का अन्तिम कवि तथा आधुनिक युग का प्रथम कवि। सन् 1330 की भाँति आज भी नूतन ऐतिहासिक युग समीप आता जा रहा है। क्या इटली हमें ऐसा नया दान्ते देगा जो इस नये सर्वहारा युग के जन्म की घड़ी का द्योतक होगा?

लन्दन, 1 फ़रवरी 1893 फ़्रेडरिक एंगेल्स

कम्युनिस्ट पार्टी
का
घोषणापत्र

यूरोप को एक हौआ आतंकित कर रहा है – कम्युनिज़्म का हौआ। इस हौअे को भगाने के लिए पोप और ज़ार, मेटरनिख़ और गीज़ो[22], फ़्रांसीसी उग्रवादी और जर्मन खुफ़िया पुलिस – बूढ़े यूरोप की सभी शक्तियों ने पवित्र गठबन्धन बना लिया है।[1]

कौन–सी ऐसी विरोधी पार्टी है जिसे उसके सत्तारूढ़ विरोधियों ने कम्युनिस्ट कहकर बदनाम न किया हो। कौन–सी ऐसी विरोधी पार्टी है जिसने पलटकर अपने से अधिक आगे बढ़ी हुई विरोधी पार्टियों और अपने प्रतिक्रियावादी विरोधियों – दोनों पर ही कम्युनिस्ट होने का आरोप लगाकर उनकी भर्त्सना न की हो।

इस तथ्य से दो बातें निकलती हैं :

1. यूरोप की सभी शक्तियों ने स्वीकार कर लिया है कि कम्युनिज़्म स्वयं एक शक्ति है।

2. अब समय आ गया है कि कम्युनिस्ट खुलेआम पूरी दुनिया के सामने अपने विचारों, अपने उद्देश्यों और अपनी प्रवृत्तियों को प्रकाशित करें और कम्युनिज़्म के हौअे की इस नानी–दादी की कहानी का पार्टी के अपने एक घोषणापत्र द्वारा ख़ात्मा कर दें।

इसी उद्देश्य से विभिन्न राष्ट्रों के कम्युनिस्ट लन्दन में जमा हुए और उन्होंने निम्नलिखित "घोषणापत्र" तैयार किया जो अंग्रेज़ी, फ़्रांसीसी, जर्मन, इतालवी, फ़्लेमिश और डेनिश भाषाओं में प्रकाशित किया जायेगा।

Laisser faire und die 10 Stunden Bill ohne ihre Illusionen über die Resultate dieser Maßregel zu theilen.

[illegible]

Mscpt Karl Marx: Erster Entwurf z. Comm. Manifest.

1. बुर्जुआ और सर्वहारा*

अभी तक आविर्भूत समस्त समाज का इतिहास** वर्ग संघर्षों का इतिहास रहा है।

स्वतन्त्र मनुष्य और दास, पेट्रीशियन और प्लेबियन, सामन्ती प्रभु और भूदास, शिल्प-संघ का उस्ताद-कारीगर*** और मज़दूर-कारीगर[23] – संक्षेप में उत्पीड़क और उत्पीड़ित बराबर एक-दूसरे का विरोध करते आये हैं। वे कभी छिपे, तो कभी प्रकट रूप से लगातार एक-दूसरे से लड़ते रहे हैं, जिस

---

* बुर्जुआ से मतलब आधुनिक पूँजीपति वर्ग से, अर्थात सामाजिक उत्पादन के साधनों के स्वामियों, उजरती श्रम का उपयोग करनेवालों से है। सर्वहारा से मतलब आधुनिक उजरती मज़दूरों से है, जिनके पास उत्पादन का स्वयं अपना कोई साधन नहीं होता, इसलिए जो जीवित रहने के लिए अपनी श्रम-शक्ति बेचने को विवश होते हैं। (*1888 के अंग्रेज़ी संस्करण में एंगेल्स की टिप्पणी*)

** अर्थात समस्त *लिपिबद्ध* इतिहास। 1847 में समाज का पूर्व-इतिहास, अर्थात लिखित इतिहास के पहले का सामाजिक संगठन, सर्वथा अज्ञात था। उसके बाद हैक्स्टहाउज़ेन ने रूस में भूमि के सामुदायिक स्वामित्व का पता लगाया; मोरेर ने सिद्ध किया कि यही वह सामाजिक आधार था, जिससे सभी ट्यूटन जातियों ने इतिहास में पदार्पण किया, और धीरे-धीरे यह प्रकट हुआ कि ग्राम-समुदाय ही भारत से लेकर आयरलैण्ड तक हर जगह समाज का आदि रूप था या रहा होगा। इस आदिम कम्युनिस्ट समाज के आन्तरिक संगठन का अपने ठेठ रूप में स्पष्टीकरण मोर्गन की **गोत्र** के असली स्वरूप और **कबीले** के साथ उसके वास्तविक सम्बन्ध की महती खोज द्वारा किया गया। इस आदिम समुदाय के विघटन के साथ समाज अलग-अलग और अन्ततः विरोधी वर्गों में विभेदित होने लगता है। मैंने अपनी पुस्तक *Der Ursprung des Familie, des Privateigentums und des Staats,* 2. Aufl. Stuttgart, 1886, ('परिवार, निजी सम्पत्ति तथा राज्य की उत्पत्ति', दूसरा जर्मन संस्करण, स्टुटगार्ट, 1886) में इन ग्राम-समुदायों के विघटन की प्रक्रिया को दर्शाने की कोशिश की है। (*1888 के अंग्रेज़ी संस्करण में एंगेल्स की टिप्पणी*)

*** गिल्ड-मास्टर (या शिल्प संघ का उस्ताद-कारीगर – *स.*) से मतलब गिल्ड के अध्यक्ष से नहीं, उसके पूर्ण अधिकारप्राप्त सदस्य से है, जिसे गिल्ड के भीतर मास्टर का स्थान प्राप्त था। (*1888 के अंग्रेज़ी संस्करण में एंगेल्स की टिप्पणी*)

लड़ाई का अन्त हर बार या तो पूरे समाज के क्रान्तिकारी पुनर्गठन में, या संघर्षरत वर्गों की बरबादी में हुआ है।

इतिहास के विगत युगों में हम प्राय: हर जगह विभिन्न सामाजिक श्रेणियों में विभाजित समाज का एक पेचीदा ढाँचा – सामाजिक श्रेणियों की नानारूपी दर्जाबन्दी पाते हैं। प्राचीन रोम में पेट्रीशियन, नाइट, प्लेबियन और दास मिलते हैं। मध्ययुग में सामन्ती प्रभु, अधीनस्थ जागीरदार, उस्ताद–कारीगर, मज़दूर–कारीगर, भूदास दिखायी देते हैं; और लगभग इन सभी वर्गों में अधीनस्थ दर्जाबन्दियाँ होती हैं।

आधुनिक बुर्जुआ समाज ने, जो सामन्ती समाज के ध्वंस से पैदा हुआ है, वर्ग विरोधों को ख़त्म नहीं किया। उसने केवल पुराने के स्थान पर नये वर्ग, उत्पीड़न की पुरानी अवस्थाओं के स्थान पर नयी अवस्थाएँ और संघर्ष के पुराने रूपों की जगह नये रूप खड़े कर दिये हैं।

किन्तु दूसरे युगों की तुलना में हमारे युग की, बुर्जुआ युग की विशेषता यह है कि उसने वर्ग विरोधों को सरल बना दिया है : आज पूरा समाज दो विशाल शत्रु शिविरों में, एक–दूसरे के ख़िलाफ़ खड़े दो विशाल वर्गों में – बुर्जुआ वर्ग और सर्वहारा वर्ग में – अधिकाधिक विभक्त होता जा रहा है।

मध्ययुग के भूदासों से प्रारम्भिक शहरों के अधिकारपत्र प्राप्त बर्गर* पैदा हुए थे। इन्हीं बर्गरों से आगे चलकर प्रथम बुर्जुआ तत्त्वों का विकास हुआ।

अमेरिका की खोज और उत्तम आशा अन्तरीप का रास्ता[24] निकाल लेने से उदीयमान बुर्जुआ वर्ग के प्रसार के लिए नया क्षेत्र खुल गया। ईस्ट इण्डीज़ और चीनी बाज़ारों, अमेरिका के उपनिवेशीकरण, उपनिवेशों के साथ व्यापार, विनिमय के साधनों और माल उत्पादन में आम वृद्धि ने वाणिज्य, नौपरिवहन और उद्योग को, और फलस्वरूप लड़खड़ाते हुए सामन्ती समाज में क्रान्तिकारी तत्त्वों को, तेज़ी के साथ विकास करने का अभूतपूर्व अवसर दिया।

उद्योग की सामन्ती प्रणाली, जिसमें औद्योगिक उत्पादन पर बन्द शिल्प–संघों का एकाधिकार होता था, नये बाज़ारों की बढ़ती हुई ज़रूरतों की पूर्ति के लिए अब काफ़ी नहीं रह गयी थी। अत: उसकी जगह मैन्युफ़ैक्चर[25] की प्रथा ने ले ली। शिल्प–संघ के उस्ताद–कारीगरों को मैन्युफ़ैक्चरिंग करने वाले मध्यम वर्ग ने धकेलकर एक ओर कर दिया। अलग–अलग निगमित शिल्प–संघों का श्रम विभाजन प्रत्येक पृथक–पृथक वर्कशॉप के श्रम विभाजन

---

* स्वतन्त्र नागरिक – *स.*

के आगे लुप्त हो गया।

इस बीच बाज़ार बराबर बढ़ते गये और माल की माँग भी बराबर बढ़ती गयी। ऐसी दशा में मैन्युफ़ैक्चर की प्रथा भी नाकाफ़ी सिद्ध होने लगी। तब भाप और मशीन के उपयोग ने औद्योगिक उत्पादन में क्रान्ति पैदा कर दी। अतः अब मैन्युफ़ैक्चर का स्थान दैत्याकार आधुनिक उद्योग ने, और औद्योगिक मध्यम वर्ग का स्थान औद्योगिक धन्नासेठों ने, पूरी की पूरी औद्योगिक फ़ौजों के नेताओं ने, आधुनिक बुर्जुआ वर्ग ने ले लिया।

आधुनिक उद्योग ने विश्व बाज़ार की स्थापना की है, जिसके लिए अमेरिका की खोज ने पथ प्रशस्त कर दिया था। इस बाज़ार ने वाणिज्य, नौपरिवहन और स्थल संचार की ज़बरदस्त उन्नति की है। इस उन्नति का प्रभाव उद्योग के विस्तार पर पड़ा है, और जिस अनुपात में उद्योग, वाणिज्य, नौपरिवहन और रेलवे में वृद्धि हुई, उसी अनुपात में बुर्जुआ वर्ग ने उन्नति की और उसकी पूँजी बढ़ी और उसने मध्ययुग से चले आ रहे प्रत्येक वर्ग को पृष्ठभूमि में धकेल दिया।

चुनाँचे हम देखते हैं कि किस तरह आधुनिक बुर्जुआ वर्ग स्वयं एक लम्बे विकासक्रम की, उत्पादन और विनिमय की प्रणालियों में हुई अनेक क्रान्तियों की उपज है।

बुर्जुआ वर्ग के विकास के हर क़दम के साथ उस वर्ग की तदनुरूप राजनीतिक उन्नति भी हुई। सामन्ती अभिजातों के प्रभुत्व काल में वह एक उत्पीड़ित वर्ग था; मध्ययुगीन कम्यून* में वह सशस्त्र और स्वशासित संघ था; कहीं पर (जैसे इटली और जर्मनी में) स्वतन्त्र शहरी प्रजातन्त्र और कहीं पर (जैसे फ़्रांस में) राजतन्त्र की कराधीन "तृतीय श्रेणी"; बाद में मैन्युफ़ैक्चर की प्रथा के दौरान उसने अभिजात वर्ग के प्रतिसन्तुलन के रूप में अर्द्धसामन्ती तत्त्वों अथवा पूर्ण निरंकुश राजतन्त्र की सेवा की और शक्तिशाली राजतन्त्रों की

---

* फ़्रांस में नवोदित नगरों ने अपने सामन्ती प्रभुओं और मालिकों से स्थानीय स्वशासन और "तृतीय श्रेणी" के रूप में राजनीतिक अधिकार जीतने के भी पहले "कम्यून" का नाम ग्रहण कर लिया था। यहाँ, सामान्यतया, बुर्जुआ वर्ग के आर्थिक विकास के सम्बन्ध में इंग्लैण्ड को और राजनीतिक विकास के सम्बन्ध में फ़्रांस को लाक्षणिक देश माना गया है। (*1888 के अंग्रेज़ी संस्करण में एंगेल्स की टिप्पणी*)

इटली और फ़्रांस के नगरवासियों ने अपने नगर समुदायों को, सामन्ती प्रभुओं से स्वशासन के अपने प्रारम्भिक अधिकारों को खरीद लेने या छीन लेने के बाद, यही नाम दिया था। (*1890 के जर्मन संस्करण में एंगेल्स की टिप्पणी*)

आधारशिला का काम किया तथा अन्ततः आधुनिक उद्योग और विश्व बाज़ार की स्थापना के बाद आधुनिक प्रातिनिधिक राज्य में अनन्य रूप से अपने लिए पूर्ण राजनीतिक प्रभुत्व जीत लिया। आधुनिक राज्य का कार्यकारी मण्डल पूरे बुर्जुआ वर्ग के सम्मिलित हितों का प्रबन्ध करने वाली कमेटी के अलावा और कुछ नहीं है।

बुर्जुआ वर्ग ने इतिहास में बहुत ही क्रान्तिकारी भूमिका अदा की है।

बुर्जुआ वर्ग ने, जहाँ पर भी उसका पलड़ा भारी हुआ, वहाँ सभी सामन्ती, पितृसत्तात्मक और काव्यात्मक सम्बन्धों का अन्त कर दिया। उसने मनुष्य को अपने "स्वाभाविक बड़ों" के साथ बाँध रखने वाले नाना प्रकार के सामन्ती सम्बन्धों को निर्ममता से तोड़ डाला; और नग्न स्वार्थ के, "नक़द पैसे-कौड़ी" के हृदयशून्य व्यवहार के सिवा मनुष्यों के बीच और कोई दूसरा सम्बन्ध बाक़ी नहीं रहने दिया। धार्मिक श्रद्धा के स्वर्गोपम आनन्दातिरेक को, वीरोचित उत्साह और कूपमण्डूकतापूर्ण भावुकता को उसने आना-पाई के स्वार्थी हिसाब-किताब के बर्फ़ीले पानी में डुबो दिया है। मनुष्य के वैयक्तिक मूल्य को उसने विनिमय मूल्य बना दिया है, और पहले के अनगिनत अनपहरणीय अधिकारपत्र द्वारा प्रदत्त स्वातन्त्र्यों की जगह अब उसने एक ऐसे अन्तःकरणशून्य स्वातन्त्र्य की स्थापना की है जिसे मुक्त व्यापार कहते हैं। संक्षेप में, धार्मिक और राजनीतिक भ्रमजाल के पीछे छिपे शोषण के स्थान पर उसने नग्न, निर्लज्ज, प्रत्यक्ष और पाशविक शोषण की स्थापना की है।

जिन पेशों के सम्बन्ध में अब तक लोगों के मन में आदर और श्रद्धा की भावना थी, उन सबका प्रभामण्डल बुर्जुआ वर्ग ने छीन लिया। डॉक्टर, वकील, पुरोहित, कवि और वैज्ञानिक, सभी को उसने अपना उज़रती मज़दूर बना लिया है।

बुर्जुआ वर्ग ने पारिवारिक सम्बन्धों के ऊपर से भावुकता का परदा उतार फेंका है और पारिवारिक सम्बन्ध को केवल धन-सम्बन्ध में बदल डाला है।

बुर्जुआ वर्ग ने दिखा दिया है कि मध्ययुग में शक्ति के उन बर्बर प्रदर्शनों के साथ-साथ, जिनकी प्रतिगामी लोग इतनी तारीफ़ करते हैं, अकर्मण्यता और आलस्य कैसे जुड़े हुए थे। उसने ही सबसे पहले दिखलाया कि मानव की क्रियाशक्ति क्या कुछ कर सकती है। उसने जो जादू कर दिखाया है वह मिस्र के पिरामिडों, रोम की जल प्रणाली और गोथिक गिरजाघरों से कहीं अधिक आश्चर्यजनक है। उसने जैसे बड़े-बड़े अभियान आयोजित किये हैं, उनके

सामने पुराने समय में जातियों के समस्त निष्क्रमण और धर्मयुद्ध[26] फीके पड़ जाते हैं।

उत्पादन के औज़ारों में लगातार क्रान्तिकारी परिवर्तन और उसके फलस्वरूप उत्पादन के सम्बन्धों में, और साथ-साथ समाज के सारे सम्बन्धों में क्रान्तिकारी परिवर्तन के बिना बुर्जुआ वर्ग जीवित नहीं रह सकता। इसके विपरीत, उत्पादन के पुराने तरीक़ों को ज्यों का त्यों बनाये रखना पहले के सभी औद्योगिक वर्गों के जीवित रहने की पहली शर्त थी। उत्पादन में निरन्तर क्रान्तिकारी परिवर्तन, सभी सामाजिक अवस्थाओं में लगातार उथल-पुथल, शाश्वत अनिश्चितता और हलचल – ये चीज़ें बुर्जुआ युग को पहले के सभी युगों से अलग करती हैं। सभी स्थिर और जड़ीभूत सम्बन्ध, जिनके साथ प्राचीन और पूज्य पूर्वाग्रहों तथा मतों की एक पूरी शृंखला जुड़ी हुई होती है, मिटा दिये जाते हैं, और सभी नये बनने वाले सम्बन्ध जड़ीभूत होने के पहले ही पुराने पड़ जाते हैं। जो कुछ भी ठोस है वह हवा में उड़ जाता है, जो कुछ पावन है वह भ्रष्ट हो जाता है, और आख़िरकार मनुष्य संजीदा नज़र से जीवन के वास्तविक हालात को, मानव-मानव के आपसी सम्बन्धों को देखने के लिए मजबूर हो जाता है।

अपने माल के लिए बराबर फैलते हुए बाज़ार की ज़रूरत के कारण बुर्जुआ वर्ग दुनिया के कोने-कोने की ख़ाक छानता है। वह हर जगह घुसने को, हर जगह पैर जमाने को, हर जगह सम्पर्क क़ायम करने को बाध्य होता है।

विश्व बाज़ार को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल कर बुर्जुआ वर्ग ने हर देश में उत्पादन और खपत को एक सार्वभौमिक रूप दे दिया है। प्रतिगामियों की भावनाओं को गहरी चोट पहुँचाते हुए उसने उद्योग के पैरों के नीचे से उस राष्ट्रीय आधार को खिसका दिया है जिस पर वह खड़ा था। पुराने जमे-जमाये सभी राष्ट्रीय उद्योग या तो नष्ट कर दिये गये हैं या नित्यप्रति नष्ट किये जा रहे हैं। उनका स्थान ऐसे नये-नये उद्योग ले रहे हैं जिनकी स्थापना सभी सभ्य देशों के लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन जाती है; उनका स्थान ऐसे नये उद्योग ले रहे हैं जो उत्पादन के लिए अब सिर्फ़ अपने देश का ही कच्चा माल इस्तेमाल नहीं करते बल्कि दूर-दूर देशों से लाया हुआ कच्चा माल इस्तेमाल करते हैं; उनका स्थान ऐसे उद्योग ले रहे हैं जिनके उत्पादन की खपत सिर्फ़ उसी देश में नहीं, बल्कि पृथ्वी के कोने-कोने में होती है। उन पुरानी

आवश्यकताओं की जगह, जिन्हें स्वदेश की बनी चीज़ों से पूरा किया जाता था, अब ऐसी नयी–नयी आवश्यकताएँ पैदा हो गयी हैं जिन्हें पूरा करने के लिए दूर–दूर के देशों और भू–भागों से माल मँगाना होता है। पुरानी स्थानीय और राष्ट्रीय पृथकता और आत्मनिर्भरता का स्थान चौतरफ़ा पारस्परिक सम्पर्क ने, सार्वभौमिक अन्तरनिर्भरता ने ले लिया है। और भौतिक उत्पादन की ही तरह, बौद्धिक कृतियाँ सार्वभौमिक सम्पत्ति बन गयी हैं। राष्ट्रीय एकांगीपन और संकुचित दृष्टिकोण – दोनों ही अधिकाधिक असम्भव होते जा रहे हैं, और अनेक राष्ट्रीय और स्थानीय साहित्यों से एक विश्व साहित्य उत्पन्न हो रहा है।

उत्पादन के सभी औज़ारों में तीव्र उन्नति और संचार साधनों की विपुल सुविधाओं के कारण बुर्जुआ वर्ग सभी राष्ट्रों को, यहाँ तक कि बर्बर से बर्बर राष्ट्रों को भी सभ्यता की परिधि में खींच लाता है। उसके माल की सस्ती क़ीमत एक ऐसा तोपख़ाना है जिसके ज़रिये वह सभी चीनी दीवारों को ढहा देता है, और विदेशियों के प्रति तीव्र और घोर घृणा रखने वाली बर्बर जातियों को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर देता है। प्रत्येक राष्ट्र को, इस भय से कि अन्यथा वह लुप्त हो जायेगा, वह पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली अपनाने के लिए मजबूर कर देता है; वह उन्हें जिस चीज़ के लिए मजबूर करता है उसे वह सभ्यता कहता है ताकि वे भी अपने बीच सभ्यता क़ायम करें अर्थात ख़ुद बुर्जुआ बन जायें। संक्षेप में, बुर्जुआ वर्ग सारी दुनिया को अपने ही साँचे में ढाल देता है।

बुर्जुआ वर्ग ने देहातों को शहरों के अधीन कर दिया है। उसने बहुत–बड़े–बड़े शहर बसाये हैं और देहातों की तुलना में शहरों की जनसंख्या में प्रचण्ड वृद्धि की है, और इस प्रकार जनसंख्या के एक बड़े भाग को देहाती जीवन की जड़ता से मुक्त किया है। जिस तरह बुर्जुआ वर्ग ने देहातों को शहरों का आश्रित बना दिया है, उसी तरह उसने बर्बर और अर्द्धबर्बर देशों को सभ्य देशों का, कृषक राष्ट्रों को औद्योगिक राष्ट्रों का, पूरब को पश्चिम का आश्रित बना दिया है।

आबादी, उत्पादन के साधनों और सम्पत्ति की बिखरी हुई अवस्था को बुर्जुआ वर्ग अधिकाधिक ख़त्म करता जाता है। बिखरी हुई आबादियों को उसने एक जगह जमा किया है, उत्पादन के साधनों का केन्द्रीकरण किया है और सम्पत्ति को चन्द लोगों के हाथों में संकेन्द्रित कर दिया है। राजनीतिक केन्द्रीकरण इसका अवश्यम्भावी परिणाम था। जो प्रान्त पहले स्वतन्त्र या

ढीले–ढाले ढंग से सम्बद्ध थे और जिनके हित और क़ानून, जिनकी सरकारें और कर प्रणालियाँ अलग–अलग थीं, वे समूहबद्ध होकर, एक सरकार, एक विधि–संहिता, एक राष्ट्रीय वर्ग हित, एक सीमा और कर प्रणाली के साथ आज एक राष्ट्र बन गये हैं।

मुश्किल से अपने एक शताब्दी के शासनकाल में बुर्जुआ वर्ग ने जितनी शक्तिशाली और प्रचण्ड उत्पादक शक्तियाँ उत्पन्न की हैं, उतनी पिछली सभी पीढ़ियों में मिलाकर भी नहीं उत्पन्न हुईं। प्राकृतिक शक्तियों का मनुष्य द्वारा वशीभूत किया जाना, मशीनों का उपयोग, उद्योग और खेतीबारी में रसायन का प्रयोग, भाप–नौपरिवहन, रेलवे, बिजली के तार, पूरे के पूरे महाद्वीपों का खेती करने लायक बनाया जाना, नदियों से नहरें निकाला जाना, पूरी आबादियों का मानो छूमन्तर से पैदा हो जाना – क्या पिछली शताब्दियों में कोई यह सोच भी सकता था कि सामाजिक श्रम के गर्भ में ऐसी उत्पादक शक्तियाँ सोयी पड़ी हैं?

इस तरह हम देखते हैं : उत्पादन और विनिमय के वे साधन, जिनकी बुनियाद पर बुर्जुआ वर्ग ने अपना निर्माण किया है, सामन्ती समाज में ही पैदा हो गये थे। लेकिन उत्पादन और विनिमय के इन साधनों के विकास की एक ख़ास मंज़िल पर वे अवस्थाएँ, जिनमें सामन्ती समाज उत्पादन और विनिमय करता था, अर्थात कृषि और उद्योग का सामन्ती संगठन, या यूँ कहिये कि स्वामित्व के सामन्ती सम्बन्ध, नवोन्नत उत्पादक शक्तियों से बिल्कुल बेमेल हो गये; वे बहुत सारी बेड़ियाँ बन गये। उन्हें तोड़ फेंकना आवश्यक हो गया और उन्हें तोड़ फेंका गया।

उनका स्थान बुर्जुआ वर्ग के आर्थिक और राजनीतिक प्रभुत्व और अनुकूल सामाजिक और राजनीतिक ढाँचे के साथ मुक्त होड़ ने ले लिया।

आज हमारे सामने ठीक इसी तरह की गति हो रही है। उत्पादन, विनिमय और स्वामित्व के बुर्जुआ सम्बन्धों सहित आधुनिक बुर्जुआ समाज, वह समाज जिसने मानो तिलिस्म से उत्पादन और विनिमय के ऐसे विशाल साधनों को खड़ा कर दिया है, एक ऐसे जादूगर के समान है जिसने अपने जादू के ज़ोर से पाताल लोक की शक्तियों को बुला तो लिया है, लेकिन अब उन्हें क़ाबू में रखने में वह असमर्थ है। पिछले कई दशकों से उद्योग और वाणिज्य का इतिहास आधुनिक उत्पादक शक्तियों का उत्पादन की समकालीन अवस्थाओं के ख़िलाफ़, स्वामित्व के उन सम्बन्धों के ख़िलाफ़ विद्रोह का ही इतिहास है,

जो बुर्जुआ वर्ग और उसके शासन के अस्तित्व की शर्तें हैं। यहाँ पर उन वाणिज्यिक संकटों का ज़िक्र कर देना काफ़ी है जिनके नियतकालिक आवर्तन द्वारा बुर्जुआ समाज के अस्तित्व की हर बार अधिकाधिक सख़्ती के साथ परीक्षा होती है। इन संकटों में न केवल मौजूदा पैदावार के ही, बल्कि पहले से उत्पन्न उत्पादक शक्तियों के भी एक बड़े भाग को समय-समय पर नष्ट कर दिया जाता है। इन संकटों के समय एक महामारी फैल जाती है जो पिछले सभी युगों में एक बिल्कुल बेतुकी बात समझी जाती – अर्थात अतिउत्पादन की महामारी। समाज अचानक अपने को क्षणिक बर्बरता की अवस्था में लौटा हुआ पाता है; ऐसा लगता है कि उसके जीवन निर्वाह के सभी साधनों को किसी अकाल या सर्वनाशी विश्वयुद्ध ने एकबारगी ख़त्म कर दिया है; उद्योग और वाणिज्य नष्ट हो गये प्रतीत होते हैं। और यह सब क्यों? इसलिए कि समाज में सभ्यता का, जीवन निर्वाह के साधनों का, उद्योग और वाणिज्य का अतिशय हो गया है। समाज की मौजूदा उत्पादक शक्तियाँ बुर्जुआ स्वामित्व की अवस्थाओं को अब उन्नत नहीं करतीं; बल्कि वे इन अवस्थाओं के लिए अतीव सशक्त बन जाती हैं, जिनकी बेड़ियों में वे जकड़ी हुई होती हैं; और जैसे ही वे इन बेड़ियों को तोड़ देती हैं वैसे ही वे पूरे बुर्जुआ समाज में अव्यवस्था पैदा कर देती हैं, बुर्जुआ स्वामित्व को ख़तरे में डाल देती हैं। बुर्जुआ समाज की अवस्थाएँ उनके द्वारा उत्पादित सम्पत्ति को समाविष्ट करने के लिए बहुत संकुचित हो जाती हैं। बुर्जुआ वर्ग इन संकटों से किस प्रकार अपने को उबारता है? एक ओर उत्पादक शक्तियों के एक बड़े भाग को ज़बरदस्ती नष्ट करके और दूसरी ओर नये-नये बाज़ारों पर क़ब्ज़ा जमाकर और साथ ही पुराने बाज़ारों का और भी मुकम्मल तौर पर इस्तेमाल कर – यानी और भी वृहत और विनाशकारी संकटों के लिए पथ प्रशस्त कर, और इन संकटों को रोकने की क्षमता को घटाकर।

जिन हथियारों से बुर्जुआ वर्ग ने सामन्तवाद को मार गिराया था, वे ही अब बुर्जुआ वर्ग के ख़िलाफ़ मोड़ दिये जाते हैं।

किन्तु बुर्जुआ वर्ग ने ऐसे हथियारों को ही नहीं गढ़ा है जो उसका अन्त कर देंगे, बल्कि उसने ऐसे लोगों को भी पैदा किया है जो इन हथियारों का इस्तेमाल करेंगे – आधुनिक मज़दूर वर्ग – **सर्वहारा वर्ग**।

जिस अनुपात में बुर्जुआ वर्ग का, अर्थात पूँजी का विकास होता है, उसी अनुपात में सर्वहारा वर्ग का, आधुनिक मज़दूर वर्ग का, उन श्रमजीवियों के वर्ग

का विकास होता है, जो तभी तक ज़िन्दा रह सकते हैं जब तक उन्हें काम मिलता जाये, और उन्हें काम तभी तक मिलता है, जब तक उनका श्रम पूँजी में वृद्धि करता है। ये श्रमजीवी, जो अपने को अलग-अलग बेचने के लिए लाचार हैं, अन्य व्यापारिक माल की तरह ख़ुद भी माल हैं, और इसलिए वे होड़ के उतार-चढ़ाव तथा बाज़ार की हर तेज़ी-मन्दी के शिकार होते हैं।

मशीनों के विस्तृत इस्तेमाल तथा श्रम विभाजन के कारण सर्वहाराओं के काम का वैयक्तिक चरित्र नष्ट हो गया है और इसलिए यह काम उनके लिए आकर्षक नहीं रह गया है। मज़दूर मशीन का पुछल्ला बन जाता है और उससे सबसे सरल, सबसे नीरस और आसानी से अर्जित योग्यता की माँग की जाती है। इसलिए मज़दूर के उत्पादन पर ख़र्च लगभग पूर्णतः उसके जीवन निर्वाह और वंश वृद्धि के लिए आवश्यक साधनों तक सीमित रह गया है। लेकिन हर माल का, और इसलिए श्रम का भी दाम[27] उसके उत्पादन में लगे हुए ख़र्च के बराबर होता है। अतः जिस अनुपात में काम की अरुचिकरता में वृद्धि होती है उसी अनुपात में मज़दूरी घटती है। यही नहीं, जिस मात्रा में मशीनों का इस्तेमाल तथा श्रम विभाजन बढ़ता है उसी मात्रा में श्रम का बोझ भी बढ़ता जाता है, चाहे यह काम के घण्टे बढ़ाने के ज़रिये हो या निर्धारित समय में मज़दूरों से अधिक काम लेने या मशीन की रफ़्तार बढ़ाने आदि के ज़रिये।

आधुनिक उद्योग ने पितृसत्तात्मक उस्ताद-कारीगर के छोटे-से वर्कशाप को औद्योगिक पूँजीपति के विशाल कारख़ाने में बदल दिया है। कारख़ाने में भरे झुण्ड के झुण्ड श्रमजीवी सैनिकों की तरह संगठित किये जाते हैं। औद्योगिक फ़ौज के सिपाहियों की तरह वे बाक़ायदा एक दरजावार तरतीब में बँटे हुए अफ़सरों और सार्जेण्टों की कमान में रखे जाते हैं। वे केवल बुर्जुआ वर्ग और बुर्जुआ राज्य के ही ग़ुलाम नहीं हैं; बल्कि हर दिन, हर घण्टे वे मशीन के, ओवरसियर के और सर्वोपरि ख़ुद बुर्जुआ कारख़ानेदार के ग़ुलाम होते हैं। यह तानाशाही जितना ही अधिक खुलकर यह घोषित करती है कि मुनाफ़ा ही उसका लक्ष्य और उद्देश्य है, उतना ही अधिक वह तुच्छ, घृणित और कटु होती है।

शारीरिक श्रम में जितनी ही प्रवीणता और मशक़्क़त की ज़रूरत कम होती जाती है अर्थात जितनी ही आधुनिक उद्योग में प्रगति होती जाती है, उतना ही अधिक पुरुषों का स्थान स्त्रियाँ लेती जाती हैं। जहाँ तक मज़दूर वर्ग का प्रश्न है, आयु और लिंगभेद का कोई विशिष्ट सामाजिक महत्त्व नहीं रह

गया है। सभी श्रम के औज़ार हैं – आयु और लिंगभेद के अनुसार किसी पर कम ख़र्च बैठता है, तो किसी पर ज़्यादा।

कारख़ानेदार द्वारा मज़दूर के शोषण का फ़िलहाल अन्त हुआ नहीं, और उसे नक़द मज़दूरी मिली नहीं कि फ़ौरन बुर्जुआ वर्ग के अन्य भाग – मकान–मालिक, दूकानदार, गिरवी रखने वाला महाजन, आदि – उस पर टूट पड़ते हैं।

मध्यम वर्ग के निम्न स्तर – छोटे कारोबारी, दूकानदार, आम तौर पर किरायाजीवी, दस्तकार और किसान – ये सब धीरे–धीरे सर्वहारा वर्ग की स्थिति में पहुँच जाते हैं। कुछ तो इसलिए कि जिस पैमाने पर आधुनिक उद्योग चलता है उसके लिए उनकी छोटी पूँजी पूरी नहीं पड़ती और बड़े पूँजीपतियों के साथ होड़ में वह डूब जाती है; और कुछ इसलिए कि उत्पादन के नये–नये तरीक़ों के निकल आने के कारण उनके विशिष्टीकृत कौशल का कोई मूल्य नहीं रह जाता है। इस प्रकार आबादी के सभी वर्गों से सर्वहारा वर्ग की भर्ती होती है।

सर्वहारा वर्ग विकास की विभिन्न मंज़िलों से गुज़रता है। जन्म काल से ही बुर्जुआ वर्ग से उसका संघर्ष शुरू हो जाता है। शुरू में अकेले–दुकेले मज़दूर लड़ते हैं, फिर एक कारख़ाने के मज़दूर मिलकर लड़ते हैं, तब फिर एक उद्योग के एक इलाक़े के सब मज़दूर एक साथ उस पूँजीपति से मोर्चा लेते हैं जो उनका सीधे–सीधे शोषण करता है। उनका हमला उत्पादन की बुर्जुआ अवस्थाओं पर नहीं होता बल्कि ख़ुद उत्पादन के औज़ारों पर होता है। वे अपनी मेहनत के साथ होड़ करने वाले बाहर से मँगाये गये सामानों को नष्ट कर देते हैं, मशीनों को चूर कर देते हैं, फ़ैक्टरियों में आग लगा देते हैं और मध्ययुग के कारीगर की खोई हुई हैसियत को फिर से क़ायम करने की बलपूर्वक कोशिश करते हैं।

इस अवस्था में मज़दूर देशभर में बिखरे हुए, असम्बद्ध और अपनी ही आपसी होड़ के कारण बँटे हुए जन–समुदाय होते हैं। अगर कहीं मिलकर वे अपना एक ठोस संगठन बना भी लेते हैं तो यह अभी उनकी सक्रिय एकता का फल नहीं, बल्कि बुर्जुआ वर्ग की एकता का फल होता है, क्योंकि बुर्जुआ वर्ग को अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पूरे सर्वहारा वर्ग को गतिशील करना पड़ता है और वह ऐसा करने में अभी कुछ समय तक समर्थ भी होता है। इसलिए इस अवस्था में सर्वहारा वर्ग अपने शत्रुओं से नहीं, बल्कि

अपने शत्रुओं के शत्रुओं से, निरंकुश राजतन्त्र के अवशेषों, भूस्वामियों, ग़ैर–औद्योगिक बुर्जुआओं, निम्न–बुर्जुआओं से लड़ता है। इस प्रकार, इतिहास की समस्त गतिविधि के सूत्र बुर्जुआ वर्ग के हाथों में केन्द्रित रहते हैं; इस प्रकार हासिल की गयी हर जीत बुर्जुआ वर्ग की जीत होती है।

लेकिन उद्योग के विकास के साथ–साथ सर्वहारा वर्ग की संख्या में ही वृद्धि नहीं होती, बल्कि वह बड़ी–बड़ी जमातों में संकेन्द्रित हो जाता है, उसकी ताक़त बढ़ जाती है और उसे अपनी इस ताक़त का अधिकाधिक अहसास होने लगता है। मशीनें जिस अनुपात में श्रम के सभी भेदों को मिटाती जाती हैं और लगभग सभी जगह मज़दूरी को एक ही निम्न स्तर पर लाती जाती हैं, उसी अनुपात में सर्वहारा वर्ग की पाँतों में नाना प्रकार के हित और जीवन की अवस्थाएँ अधिकाधिक एकसम होती जाती हैं। बुर्जुआ वर्ग की बढ़ती हुई आपसी होड़ और उससे पैदा होने वाले व्यापारिक संकटों के कारण मज़दूरी और भी अस्थिर हो जाती है। मशीनों में लगातार सुधार, जो निरन्तर तेज़ी के साथ बढ़ता जाता है, मज़दूरों की जीविका को अधिकाधिक अनिश्चित बना देता है। अलग–अलग मज़दूरों और अलग–अलग पूँजीपतियों की टक्करें अधिकाधिक रूप से दो वर्गों के बीच की टक्करों की शक्ल अख़्तियार करती जाती हैं। और तब बुर्जुआ वर्ग के विरुद्ध मज़दूर अपने संगठन (ट्रेड यूनियनें) बनाने लगते हैं, मज़दूरी की दर को क़ायम रखने के लिए वे संघबद्ध होते हैं; समय–समय पर होने वाली इन टक्करों के लिए पहले से तैयार रहने के निमित्त वे स्थायी संघों की स्थापना करते हैं। जहाँ–तहाँ उनकी लड़ाई बलवों का रूप धारण कर लेती है।

जब–तब मज़दूरों की जीत भी होती है लेकिन केवल वक़्ती तौर पर। उनकी लड़ाइयों का असली फल तात्कालिक नतीजों में नहीं, बल्कि मज़दूरों की निरन्तर बढ़ती हुई एकता में है। आधुनिक उद्योग द्वारा उत्पन्न किये गये संचार साधनों से, जो अलग–अलग जगहों के मज़दूरों को एक–दूसरे के सम्पर्क में ला देते हैं, एकता के इस काम में मदद मिलती है। एक ही प्रकार के अनगिनत स्थानीय संघर्षों को केन्द्रीकृत करके उन्हें एक राष्ट्रीय वर्ग संघर्ष का रूप देने के लिए बस इसी प्रकार के सम्पर्क की ज़रूरत होती है। लेकिन प्रत्येक वर्ग संघर्ष एक राजनीतिक संघर्ष होता है। और उस एकता को, जिसे हासिल करने के लिए पुराने ज़माने में यातायात की घोर असुविधाओं के कारण मध्ययुग के बर्गरों को सदियाँ लगी थीं, रेलों की कृपा से आधुनिक सर्वहारा

कुछ ही वर्षों में हासिल कर लेते हैं।

सर्वहाराओं का एक वर्ग के रूप में संगठन और फलतः एक राजनीतिक पार्टी के रूप में उनका संगठन उनकी आपसी होड़ के कारण बराबर गड़बड़ी में पड़ जाता है। लेकिन हर बार वह फिर उठ खड़ा होता है – पहले से भी अधिक मज़बूत, दृढ़ और शक्तिशाली बनकर। ख़ुद बुर्जुआ वर्ग की भीतरी फूटों का फ़ायदा उठाकर वह मज़दूरों के अलग-अलग हितों को क़ानूनी तौर पर भी मनवा लेता है। इंग्लैण्ड में दस घण्टे के काम के दिन का क़ानून इसी तरह पारित हुआ था।

पुराने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच टकराव कुल मिलाकर सर्वहारा वर्ग के विकास को अनेक रूपों में मदद ही पहुँचाते हैं। बुर्जुआ वर्ग अपने को लगातार संघर्ष में फँसा पाता है : पहले अभिजात वर्ग के विरुद्ध, फिर ख़ुद बुर्जुआ वर्ग के उन भागों के विरुद्ध, जिनके हित औद्योगिक प्रगति के प्रतिकूल हो जाते हैं और अन्ततः विदेशों के बुर्जुआ वर्ग के विरुद्ध तो हमेशा ही। इन सभी लड़ाइयों में वह सर्वहारा वर्ग से अपील करने के लिए, उससे मदद माँगने के लिए और इस प्रकार उसे राजनीतिक अखाड़े में खींच लाने के लिए मजबूर होता है। अतः बुर्जुआ वर्ग ख़ुद ही सर्वहारा वर्ग को अपने राजनीतिक और सामान्य शिक्षण के तत्त्वों से सम्पन्न कर देता है, अर्थात उनके हाथ में बुर्जुआ वर्ग से लड़ने के लिए हथियार थमा देता है।

इसके अलावा, जैसाकि हम ऊपर देख चुके हैं, उद्योग की उन्नति के कारण, शासक वर्गों के पूरे के पूरे समूह सर्वहाराओं की अवस्था में पहुँचा दिये जाते हैं, या कम से कम उनके अस्तित्व की अवस्थाओं के लिए ख़तरा पैदा हो जाता है। ये लोग भी सर्वहारा वर्ग को ज्ञानोद्दीप्ति और प्रगति के नये तत्त्व प्रदान करते हैं।

अन्त में, वर्ग संघर्ष जब निर्णायक घड़ी के नज़दीक पहुँच जाता है तब शासक वर्ग में, वास्तव में सम्पूर्ण पुराने समाज के अन्दर, हो रही विघटन की प्रक्रिया इतना प्रचण्ड और प्रत्यक्ष रूप धारण कर लेती है कि शासक वर्ग का एक छोटा-सा हिस्सा उससे अलग होकर क्रान्तिकारी वर्ग के साथ – उस वर्ग के साथ जिसके हाथ में भविष्य होता है – आ मिलता है। इसलिए, जिस तरह पहले के युग में सामन्तों का एक भाग टूटकर बुर्जुआ वर्ग से आ मिला था, उसी तरह अब बुर्जुआ वर्ग का एक हिस्सा और ख़ास तौर से बुर्जुआ विचारकों का एक हिस्सा जिसने इतिहास की समग्र गति को सैद्धान्तिक रूप में समझने

के योग्य स्तर पर ख़ुद को पहुँचा दिया है, सर्वहारा वर्ग से आकर मिल जाता है।

बुर्जुआ वर्ग के मुक़ाबले में आज जितने भी वर्ग खड़े हैं, उन सबमें सर्वहारा ही वास्तव में क्रान्तिकारी वर्ग है। दूसरे वर्ग आधुनिक उद्योग के समक्ष ह्रासोन्मुख होकर अन्ततः विलुप्त हो जाते हैं; सर्वहारा वर्ग ही उसकी मौलिक और विशिष्ट उपज है।

निम्न मध्यम वर्ग के लोग – छोटे कारख़ानेदार, दूकानदार, दस्तकार और किसान – ये सब मध्यम वर्ग के अंश के रूप में अपने अस्तित्व को नष्ट होने से बचाने के लिए बुर्जुआ वर्ग से लोहा लेते हैं। इसलिए वे क्रान्तिकारी नहीं, रूढ़िवादी हैं। इतना ही नहीं, चूँकि वे इतिहास के चक्र को पीछे की ओर घुमाने की कोशिश करते हैं, इसलिए वे प्रतिगामी हैं। अगर कहीं वे क्रान्तिकारी हैं तो सिर्फ़ इसलिए कि उन्हें बहुत जल्द सर्वहारा वर्ग में मिल जाना है; चुनाँचे वे अपने वर्तमान नहीं, बल्कि भविष्य के हितों की रक्षा करते हैं; अपने दृष्टिकोण को त्यागकर वे सर्वहारा का दृष्टिकोण अपना लेते हैं।

"ख़तरनाक वर्ग,"[28] समाज का कचरा, पुराने समाज के निम्नतम स्तरों में से निकला हुआ और निष्क्रियता के कीचड़ में सड़ता हुआ समुदाय जहाँ–तहाँ सर्वहारा क्रान्ति की आँधी में पड़कर आन्दोलन में खिंच आ सकता है; लेकिन उसके जीवन की अवस्थाएँ उसे प्रतिक्रियावादी षड्यन्त्र के भाड़े के टट्टू का काम करने के लिए कहीं अधिक मौजूँ बना देती हैं।

सर्वहारा वर्ग की मौजूदा अवस्था में पुराने समाज की अवस्थाओं का वस्तुतः अब नाम–निशान तक बाक़ी नहीं रह गया है। सर्वहारा के पास कोई सम्पत्ति नहीं है; अपनी स्त्री और अपने बच्चों के साथ उसका जो सम्बन्ध है वह बुर्जुआ पारिवारिक सम्बन्धों से बिल्कुल ही भिन्न है। आधुनिक औद्योगिक श्रम ने, पूँजी के आधुनिक जुवे ने – जो इंग्लैण्ड, फ़्रांस, अमेरिका और जर्मनी, सब जगह एक ही जैसा है – उसके राष्ट्रीय चरित्र के सभी चिह्नों का अन्त कर दिया है। क़ानून, नैतिकता, धर्म – ये सब उसके लिए बुर्जुआ पूर्वाग्रह मात्र हैं, जिनकी ओट में घातक बुर्जुआ हित छिपे हुए हैं।

आज तक जिन–जिन वर्गों का पलड़ा भारी हुआ है, उन सबने अपने पहले से हासिल दरजे को मज़बूत बनाने के लिए समाज को अपनी हस्तगतकरण प्रणाली के अधीन करने की कोशिश की है। सर्वहारा वर्ग अपनी अब तक की हस्तगतकरण प्रणाली का और उसके साथ–साथ पहले की

प्रत्येक हस्तगतकरण प्रणाली का अन्त किये बिना समाज की उत्पादक शक्तियों का स्वामी नहीं बन सकता। सर्वहारा वर्ग के पास बचाने और सुरक्षित रखने के लिए अपना कुछ भी नहीं है; उसका लक्ष्य निजी स्वामित्व की पुरानी सभी गारण्टियों और ज़मानतों को नष्ट कर देना है।

पहले के सभी ऐतिहासिक आन्दोलन अल्पमत के आन्दोलन रहे हैं या अल्पमत के फ़ायदे के लिए रहे हैं। किन्तु सर्वहारा आन्दोलन विशाल बहुमत का, विशाल बहुमत के फ़ायदे के लिए होने वाला चेतन तथा स्वतन्त्र आन्दोलन है। हमारे वर्तमान समाज का सबसे निचला स्तर, सर्वहारा वर्ग, शासकीय समाज की सभी ऊपरी परतों को पलटे बिना हिल तक नहीं सकता, किसी प्रकार अपने को ऊपर नहीं उठा सकता।

बुर्जुआ वर्ग के ख़िलाफ़ सर्वहारा वर्ग का संघर्ष, यद्यपि सारतत्त्व की दृष्टि से नहीं, तथापि रूप की दृष्टि से शुरू में राष्ट्रीय संघर्ष होता है। हर देश के सर्वहारा वर्ग को, ज़ाहिर है, पहले अपने ही बुर्जुआ वर्ग से निबटना होगा।

सर्वहारा वर्ग के विकास की सबसे सामान्य अवस्थाओं का वर्णन करते हुए हमने वर्तमान समाज के अन्दर न्यूनाधिक प्रच्छन्न रूप से चलने वाले गृहयुद्ध का उसी बिन्दु तक चित्रण किया है जहाँ वह युद्ध प्रत्यक्ष क्रान्ति के रूप में भड़क उठता है और जहाँ बुर्जुआ वर्ग को बलपूर्वक उखाड़ फेंकना सर्वहारा वर्ग के शासन के लिए आधार प्रस्तुत करता है।

अभी तक जैसाकि हम देख चुके हैं, हर तरह का समाज उत्पीड़क और उत्पीड़ित वर्गों के विरोध पर क़ायम रहा है। लेकिन किसी भी वर्ग का उत्पीड़न करने के लिए यह ज़रूरी है कि उसे कम से कम ऐसी सुविधाएँ दी जायें जिससे और न सही तो, एक ग़ुलाम वर्ग के रूप में, वह ज़िन्दा रह सके। भूदास व्यवस्था के युग में भूदास ने उन्नति कर कम्यून की सदस्यता हासिल कर ली थी, उसी तरह जैसे निम्न-बुर्जुआ सामन्ती निरंकुशता के जुवे के नीचे बुर्जुआ बनने में सफल हो गया था। लेकिन आधुनिक मज़दूर की दशा बिल्कुल उल्टी है। उद्योग की उन्नति के साथ, ऊपर उठने के बजाय, वह स्वयं अपने वर्ग के अस्तित्व के लिए आवश्यक अवस्थाओं के स्तर से नीचे गिरता जाता है। वह कंगाल हो जाता है और उसकी मुफ़लिसी आबादी और दौलत से भी ज़्यादा तेज़ी से बढ़ती है। ऐसी स्थिति में यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि बुर्जुआ वर्ग अब समाज का शासक बने रहने के और समाज पर अपने अस्तित्व की अवस्थाओं को, अनिवार्य नियम के रूप में, लादने के अयोग्य

है। बुर्जुआ वर्ग शासन करने के अयोग्य है क्योंकि वह अपने ग़ुलाम को ग़ुलामी की हालत में ज़िन्दा रहने की गारण्टी देने में असमर्थ है, क्योंकि वह उसके जीवन स्तर में ऐसी गिरावट नहीं रोक सकता जिसके फलस्वरूप वह उसकी कमाई खाने के बजाय उसका पेट भरने को मजबूर हो जाता है। समाज अब बुर्जुआ वर्ग के मातहत नहीं रह सकता – दूसरे शब्दों में, बुर्जुआ वर्ग का अस्तित्व अब समाज से मेल नहीं खाता।

बुर्जुआ वर्ग के अस्तित्व और प्रभुत्व की लाज़िमी शर्त पूँजी का निर्माण और वृद्धि है; और पूँजी की शर्त है उज़रती श्रम। उज़रती श्रम पूर्णतया मज़दूरों की आपसी होड़ पर निर्भर करता है। उद्योग की उन्नति, जिसे बुर्जुआ वर्ग अनिवार्यतः अग्रसर करता है, होड़ के कारण उत्पन्न मज़दूरों के अलगाव की जगह पर उनका संसर्गजनित क्रान्तिकारी एका क़ायम कर देती है। इस तरह आधुनिक उद्योग का विकास बुर्जुआ वर्ग के पैरों के नीचे से उस ज़मीन को ही खिसका देता है जिसके आधार पर वह उत्पादन करता है और पैदावार को हड़प लेता है। अतः बुर्जुआ वर्ग सर्वोपरि अपनी क़ब्र खोदने वालों को पैदा करता है। उसका पतन और सर्वहारा वर्ग की विजय दोनों समान रूप से अनिवार्य हैं।